



04 - एक दिल, दो घर



05 - भारत में कला विद्यालय और समय से हद

A Daily News Magazine

मोपाल
रविवार, 03 मई, 2026



मोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 240, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2



06 - चीनी नहीं जा सकती है बंगाल से उसकी पहचान



07 - फिल्मों में 'राम' का चेहरा और विवाद

सुबह

subhasaverenews@gmail.com
facebook.com/subhasaverenews
www.subhasavere.news
twitter.com/subhasaverenews

सुपमात

सूख गया है

तालाब का कंठ

उसके पास खड़े पेड़ पौधे उसकी

ओर झुक गए हैं उसको जिलाए

रखने के लिए

हवा कर रहे हैं

उनके पते झरते हैं

उसकी तपती देह पर

अचानक उसकी छाती में हिलोए

उठती है

एक औरत घड़ा लेकर

गीत गाती आ रही है

उसको पानी पिलाने के लिए।

- विजय राही

त्यस्तता



फोटो: गिरीश शर्मा

देश को जल्द ही मिलेंगी हाइपरसोनिक मिसाइलें

● सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइलों से दोगुनी ज्यादा होगी रफतार कोई डिफेंस सिस्टम नहीं रोक पाएगा, डीआरडीओ ऐक्टिव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने युद्धों की बदलती रणनीति को देखते हुए अत्याधुनिक 'हाइपरसोनिक' मिसाइल तकनीक पर काम तेज कर दिया है। डीआरडीओ प्रमुख समीर की. कामत ने एक कार्यक्रम में बताया है कि देश जल्द 'हाइपरसोनिक ग्लाइड मिसाइल' और 'हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल' से लैस होगा। इनकी रफतार सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइल से दोगुनी होगी। इसकी खासियतों की वजह से दुनिया का कोई डिफेंस सिस्टम इन्हें रोक नहीं पाएगा।



डीआरडीओ प्रमुख के अनुसार, ग्लाइड मिसाइल का पहला परीक्षण जल्द संभव है। ओपचारिक मंजूरी मिलने के 5 साल में इस मिसाइल को बेड़े में शामिल किया जाएगा।

में स्क्रेमजेट प्रोपल्शन का 1,000 सेकंड से ज्यादा समय तक परीक्षण सफल रहा है। ओपचारिक मंजूरी मिलने के 5 साल में इस मिसाइल को बेड़े में शामिल किया जाएगा।

चीन-रूस इस तकनीक में आगे

रूस के पास 'जिरकॉन' और 'किजल' हाइपरसोनिक मिसाइलें हैं। चीन के पास 'डीएफ-जेडएफ' है, जो तेजात की जा चुकी है। वहीं, अमेरिका इस तकनीक में थोड़ा पीछे रह गया है। अमेरिका के पास टॉमहॉक तकनीक की 'सुपरसोनिक' मिसाइलें हैं। लेकिन हाल के सालों में हाइपरसोनिक प्रोजेक्ट्स एआरआरडब्ल्यू असफल रहे हैं।

अग्नि-6-सरकार की हरी झंडी मिलते ही काम शुरू

डीआरडीओ प्रमुख ने स्पष्ट किया कि अग्नि-6 मिसाइल कार्यक्रम के लिए तकनीकी रूप से टीम पूरी तरह तैयार है। जैसे ही सरकार से हरी झंडी मिलेगी, हम इस पर काम शुरू कर देंगे। यह अग्नि सीरीज की सबसे आधुनिक 'इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल' होगी। माना जा रहा है कि इसकी मारक क्षमता 10,000 से 12,000 किलोमीटर तक हो सकती है। यह मिसाइल एक साथ कई परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम होगी, जिससे यह एक साथ कई लक्ष्यों को निशाना बना सकेगी।

देशभर में करोड़ों मोबाइल पर एक साथ आया अलर्ट मैसेज

● सायरन की आवाज सुनाई दी, सरकार ने इमरजेंसी अलर्ट सिस्टम की टेस्टिंग की

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में शनिवार सुबह 11.45 बजे कई मोबाइल फोन पर एकसाथ सायरन की आवाज सुनाई देने लगी। स्क्रीन पर हिंदी-अंग्रेजी में एक मैसेज था। सायरन बंद हुआ तो मोबाइल पर मैसेज पढ़कर भी सुनाया गया। इससे कई लोग परेशान हुए, तो कई कम्प्यूज। हालांकि सरकार ने कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है। यह मैसेज राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, यानी एनडीएएम ने भेजा था, जो इमरजेंसी मोबाइल अलर्ट ट्रायल का हिस्सा है।



सरकार ने पहले ही बताया था-मैसेज से घबराएं नहीं

सरकार ने दो दिन पहले ही मैसेज भेजकर लोगों से अपील की थी कि टेस्टिंग वाला मैसेज मिलने पर घबराएं नहीं। शनिवार का मैसेज केवल इमरजेंसी के हालात में चेतावनी देने वाले सिस्टम की जांच के लिए भेजा गया था। इमरजेंसी की स्थिति में लोगों को रियल टाइम अलर्ट देने के लिए सरकारी संस्था सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ टेलीमेटिक्स ने इंटीग्रेटेड अलर्ट सिस्टम को विकसित किया है।

पर्यावरण अनुकूल निर्माण को प्रोत्साहित करना आवश्यक प्रकृति अनुकूल स्थापत्य हमारे वास्तु का है आधार: मुख्यमंत्री



भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रकृति अनुकूल स्थापत्य हमारे वास्तु का आधार है। वर्तमान समय की बड़ी चुनौती यह है कि हम कंक्रीट के बढ़ते जंगलों और सिमेंट के प्राकृतिक संसाधनों के बीच खड़े हैं। पर्यावरण अनुकूल निर्माण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम उस परंपरा के उत्तराधिकारी हैं जिन्होंने स्वस्थ नगर नियोजन के साथ जल संरक्षण के लिए विशाल इकोलॉजिकल सिस्टम बनाये। विद्वान, वास्तुकार राजा भोज द्वारा विकसित भोपाल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। सोभाग्य का विषय है कि सस्टेनेबल प्यूरचर इन्वेंशंस इन ग्रीन बिल्डिंग प्रैक्टिस जैसे विषय पर भोपाल में राष्ट्रीय सेमिनार हो रहा है। प्रदेश के ऐतिहासिक स्थल मंडव के जल प्रबंधन और नगर नियोजन को देखते हुए वहां भी इस प्रकार के आयोजन होने चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को ग्रीन बिल्डिंग तकनीक पर अखिल भारतीय सेमिनार और इंडियन बिल्डिंग कांग्रेस की 113 गर्बनिंग कॉन्सिल मीटिंग के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। लोक निर्माण विभाग तथा इंडियन बिल्डिंग कांग्रेस, कार्यक्रम के आयोजक हैं।

पि.डब्ल्यू.डी. की स्मारिका, न्यूज लेटर और आईबीसी की बिल्ट इन्वायरमेंट पत्रिका का विमोचन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव का लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने शॉल-श्रीफल और स्मृतिचिह्न भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम वंदे-मातरम के गान के साथ

सस्टेनेबल प्यूरचर केवल विचार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है : मंत्री सिंह

लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में लोक निर्माण विभाग प्रदेश के बेहतर भविष्य के लिए नवाचारों के साथ अधोसंरचना विकास को गति प्रदान कर रहा है। प्रदेश में टिकाऊ निर्माण के लिए भारतीय प्राचीन निर्माण तकनीक पर हम आगे बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वैदिक घड़ी को सराहा है। इस घड़ी के निर्माण का श्रेय मुख्यमंत्री डॉ. यादव को जाता है। प्रदेश में बनने वाले सभी भवन अब ग्रीन बिल्डिंग तकनीक पर बनाए जा रहे हैं। लोक निर्माण विभाग ने अपने प्रशिक्षण कैंपेस में ग्रीन बिल्डिंग तकनीक को शामिल किया है। प्रदेश में हाईवे और प्लाईओवर्स को रेन वॉटर हार्वेस्टिंग तकनीक के साथ तैयार किया जा रहा है। मंत्री श्री सिंह ने विशेषज्ञों से आह्वान किया कि मध्यप्रदेश की विविध भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कम लागत वाली ग्रीन बिल्डिंग तकनीकों का विकास किया जाए, जिससे आम नागरिक भी इनका लाभ प्राप्त कर सकें।

हम प्रकृति से सीखें और उसके साथ आगे बढ़ें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राजा भोज ने भोज पत्रों पर लेख और निर्माण कार्यों के माध्यम से हमें प्राचीन भारतीय निर्माण परंपरा की अद्भुत सौगात दी है। राजा भोज ने प्रकृति के साथ प्रगति की बात समरगंग सूत्रधार में स्पष्ट की थी। हमारे ग्रंथों में कहा गया है 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में है। ग्रीन बिल्डिंग, पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-आकाश तत्वों के समावेश से हमारे घरों को उसी ब्रह्मंडीय संतुलन में वापस लाने की एक प्रक्रिया है। हमारे प्राचीन ग्रंथ यह मानते हैं कि एक भवन में इन सब तत्वों का समावेश आवश्यक है।

आरंभ हुआ। इस अवसर पर आईबीसी इन्वेंचरल सोन और लोक निर्माण विभाग की परियोजना क्रियान्वयन इकाई की गतिविधियों पर लघु फिल्म की प्रस्तुति हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण विभाग की स्मारिका, न्यूज लेटर और आईबीसी की बिल्ट इन्वायरमेंट पत्रिका का विमोचन किया। उनकी उपस्थिति में आईआईटी इंदौर और लोक निर्माण विभाग के बीच निर्माण तकनीक पर केंद्रित एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। दूसरा एमओयू लोक निर्माण विभाग तथा गृह संस्था के साथ किया गया।

पुणे में बच्ची से रेप और हत्या के बाद भारी बवाल

● सड़कों पर उतरे लोग, पुलिस चौकी को घेरा, फांसी की सजा की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पुणे जिले के एक गांव में 65 साल के बुजुर्ग ने 4 साल की बच्ची के साथ पहले रेप किया और फिर उसकी हत्या कर दी। मामले को लेकर गुस्साए लोग सड़कों पर उतर आए और जमकर विरोध प्रदर्शन किया। पुलिस चौकी का घेराव करके लोगों ने आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई और मौत की सजा की मांग की है। इसको लेकर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट) की सांसद सुप्रिया सुले ने लोगों से संयम बनाए रखने का आग्रह किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस मामले में कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं, महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख ने गिरफ्तार

आरोपी के लिए मौत की सजा की मांग की। सुले ने इस घटना को अमानवीय करार देते हुए मानवता को कलंकित करने वाली घटना बताया। एनसीपी सांसद ने यह भी कहा कि उन्होंने पुणे ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक से बात की है और आश्वासन दिया गया कि मामले पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उन्होंने लिखा, मैंने नास्लापुर में अमानवीय घटना के संबंध में पुणे ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक से बात की है, जिसने मानवता को कलंकित किया है। उन्होंने इस जघन्य अपराध को अंजाम देने वाले दरिंदे के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा मिले और पीड़िता को न्याय - उन्होंने आगे कहा, मेरा सभी नागरिकों से विनम्र निवेदन है कि हम सभी की सामूहिक इच्छा है कि अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा मिले और पीड़िता को न्याय मिले। पुलिस प्रशासन ने इस मामले में हम सभी के आक्रामक रुख को ध्यान में रखा है। कृपया हम सभी इस मामले में संयम बरतें। इस मामले में दोषी पक्ष के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस घटना को बेहद शर्मनाक बताते हुए देशमुख ने एक्स पर कहा कि महाराष्ट्र दिवस के अवसर पर ऐसी शर्मनाक घटना होना राज्य को शोभा नहीं देता। उन्होंने मांग की कि इस मामले की सुनवाई फास्ट-ट्रैक अदालत में की जाए और आरोपी को फांसी हो।

आज मुख्यमंत्री करेंगे इन्दौर-पीथमपुर इकोनॉमिक कॉरिडोर के प्रथम चरण का भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 3 मई को इन्दौर में इस परियोजना के प्रथम चरण का भूमि-पूजन करेंगे। यह पहल प्रदेश में अधोसंरचना, उद्योग और शहरी विकास को एकीकृत रूप में आगे बढ़ाने की रणनीति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है। मध्यप्रदेश को सुदृढ़ औद्योगिक आधार और आदर्श निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करने की दिशा में इन्दौर-पीथमपुर इकोनॉमिक कॉरिडोर महत्वपूर्ण साबित होगा। कार्यक्रम में शॉर्ट फिल्म के माध्यम से कॉरिडोर के स्वरूप, संभावनाओं और क्षेत्रीय प्रभावों को दिखाया जाएगा। यह कॉरिडोर इन्दौर एयरपोर्ट के समीप स्थित सुपर कॉरिडोर को पीथमपुर निवेश क्षेत्र से जोड़ते हुए एक सुव्यवस्थित औद्योगिक धुरी के रूप में विकसित किया जा रहा है।





संक्षिप्त समाचार

छतीसगढ़ के कांकेर में आईडी ब्लास्ट

● डीआरजी के तीन जवान हो गए शहीद, एक घायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। छतीसगढ़ के कांकेर से बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां आईडी धमाके में डीआरजी के 3 जवान बलिदान हो गए, जबकि एक जवान घायल है। पुलिस ने बताया कि सुरक्षा बल के जवान थाना छोटेबेटिया अंतर्गत कांकेर-नारायणपुर जिले के सीमा क्षेत्र में डी-माइनिंग, एरिया डोमिनेशन व सर्व ऑपरेशन के लिए टीम रवाना हुए थे। जहां पहले से बिछा कर रखी गई बारूदी सुरंग हटाने के



दौरान दुर्घटनावाश आईडी में विस्फोट हो गया। धमाका इतना तेज था कि जवानों को भागने का मौका नहीं मिला। हादसे में घायल जवानों का तुरंत रेस्क्यू किया गया, लेकिन गंभीर रूप से घायल होने के कारण तीन जवानों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं एक घायल जवान का उपचार जारी है।

विस्फोट की चपेट में आने से कांकेर डीआरजी के चार सदस्य घायल हो गए। इनमें से इस्पेक्टर सुखराम वट्टी, कांस्टेबल कुष्णा कोमरा, कांस्टेबल संजय गढपाले विस्फोटस्थल पर ही बलिदान हो गए। घायल कांस्टेबल परमानंद कोमरा को बेहतर उपचार के लिए जरूरी सुविधा दी जा रही है।

सैकड़ों आईडी नष्ट कर चुके हैं सुरक्षाकर्मी- बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पट्टेटीलिंगम ने बताया कि पिछले कुछ महीनों में आत्मसमर्पित माओवादी कैडरों ने छिपाए गए आईडी की जानकारी दी है। सुरक्षा बल लगातार उन्हें निष्क्रिय करने में लगे हुए हैं। शनिवार को कांकेर जिला पुलिस दल आईडी की निष्क्रिय कर रहा था, तभी उसमें विस्फोट हो गया। तीन पुलिस बल के सदस्यों की घटनास्थल पर भी मौत हो गई जबकि एक पुलिस बल का सदस्य गंभीर रूप से घायल हो गया।

मध्य प्रदेश में शासन व्यवस्था पूरी तरह विफल, केंद्र सरकार करे हस्तक्षेप : जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने प्रदेश में लगातार हो रहे बड़े हादसों, सामूहिक मौतों, किसानों की बढ़ती, बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार तथा प्रशासनिक अव्यवस्था को लेकर भारतीय जनता पार्टी सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में शासन व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है और अब केंद्र सरकार को तत्काल हस्तक्षेप करना चाहिए।

पटवारी ने कहा कि प्रदेश में लगातार ऐसी घटनाएं सामने आ रही हैं, जिनमें सामूहिक रूप से लोगों की जान जा रही है। यह केवल हादसे नहीं, बल्कि सरकार की लापरवाही से हो रही मौतें हैं। राजनीतिक जिम्मेदारी पूरी तरह शून्य हो चुकी है। उन्होंने कहा कि वे इस गंभीर स्थिति को लेकर महामहिम राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को पत्र लिख रहे हैं, ताकि मध्य प्रदेश की विफल शासन व्यवस्था पर केंद्र सरकार संज्ञान ले। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पानी तक सुरक्षित नहीं है, जहरीले पानी से लोगों की जान जा रही है। दवाइयों की लापरवाही से 26 बच्चों की मौत होना अत्यंत दुःख और शर्मनाक है। एन-जीटी की आपत्तियों के बावजूद कूज संचलन किया गया, जिसकी लापरवाही से 9 लोगों की जान गई। बर्गी डैम से जब शव निकाले जा रहे थे, उस समय मुख्यमंत्री राजभवन में लोक नृत्य देखने में व्यस्त थे। यह संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है।

इन्वेस्ट इंडिया के आंकड़ों में मध्यप्रदेश रोजगार सृजन में देश का अग्रणी राज्य

भोपाल (नप्र)। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग की राष्ट्रीय निवेश प्रोत्साहन एवं सुविधा एजेंसी इन्वेस्ट इंडिया द्वारा जारी ताजा निवेश आंकड़ों में मध्यप्रदेश रोजगार सृजन के मामले में देश में अग्रणी राज्य के रूप में उभरा है। यह जानकारी भारत सरकार द्वारा जारी आधिकारिक जानकारी में सामने आई है, जो देश में निवेश के बढ़ते दायरे और राज्यों की भूमिका को रेखांकित करती है। राष्ट्रीय रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि रोजगार सृजन में मध्यप्रदेश समूचे देश में आंध्र प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और महाराष्ट्र को पीछे छोड़कर शीर्ष स्थान पर रहा है। यह उपलब्धि राज्य में विकसित हो रहे निवेश अनुकूल वातावरण, अधोसंरचना विस्तार और उद्योगोन्मुख नीतियों का परिणाम मानी जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में वर्ष-2025 को म.प्र. में रोजगार और उद्योग वर्ष घोषित किया गया। मध्यप्रदेश में निवेश संवर्धन को प्राथमिकता दी गई है। देश और विदेश में आयोजित इन्वेस्टर मीट, रोड-शो और संवाद कार्यक्रमों के माध्यम से निवेशकों से सीधा जुड़ाव स्थापित किया गया है। साथ ही रोजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव की श्रृंखला के माध्यम से प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार सुनिश्चित किया गया है। इन्वेस्ट इंडिया के ये आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के सकल प्रयासों से मध्यप्रदेश न केवल निवेश आकर्षित करने में सक्षम है, बल्कि उसे प्रभावी रूप से रोजगार सृजन में भी परिवर्तित कर रहा है।

किस अधिकारी से काउंटिंग कराए, यह ईसी का अधिकार

● सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी, टीएमसी को लगा तगड़ा झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव के दौरान ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से सियासी लड़ाई लड़ रही थी। दो चरणों में वोटिंग खत्म होने के बाद अब टीएमसी की लड़ाई चुनाव आयोग से शुरू हो चुकी है। ममता की पार्टी ने वोटों की गिनती के लिए सुपरवाइजर और सहायक के तौर पर केंद्र सरकार और अन्य कर्मचारियों की तैनाती को लेकर ऐतराज जताया है। इसके लिए कानूनी लड़ाई भी लड़ रही है।



कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका खारिज होने के बाद इस मामले पर अब सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई है।

सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को सुनवाई के दौरान यह स्पष्ट किया कि चुनाव आयोग के पास इस बात का विशेषाधिकार है कि मतगणना के लिए किन अधिकारियों का चयन करता है। जस्टिस बागची ने कहा, यह विकल्प खुला है कि गिनती सुपरवाइजर और गिनती सहायक केंद्र सरकार के हो सकते हैं या राज्य सरकार के। इसलिए जब यह विकल्प खुला है तो हम यह नहीं मान सकते कि यह अधिसूचना नियमों के विपरीत है।

एससी की सख्ती के बाद टीएमसी का यूटर्न

सुप्रीम कोर्ट की इन टिप्पणियों के बाद टीएमसी ने अपने रुख में यू-टर्न लेते हुए चुनाव आयोग के सख्त रुख को सख्ती से लागू करने की मांग की। इसके जवाब में आयोग ने अदालत को आश्वासन दिया कि दिशानिर्देशों का ठीक से पालन किया जा रहा है। आपको बता दें कि इस याचिका पर सुनवाई के लिए जस्टिस पामिदिघतम नरसिम्हा और जस्टिस जॉयमल्य बागची की एक विशेष पीठ का गठन किया गया है। सुप्रीम कोर्ट में टीएमसी की पैरवी वरिष्ठ वकील कपिल सिबल कर रहे हैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के सामने चार मुख्य आपत्तियां रखी हैं। उन्होंने दलील दी कि तैनाती के संबंध में जिला चुनाव अधिकारियों को 13 अप्रैल को नोटिस जारी किया गया था, लेकिन पार्टी को इसकी जानकारी 29 अप्रैल को ही मिली।

कूज को डूबते देख 25 फीट ऊंचाई से कूद गया मजदूर रमजान

4 लोगों की सुरक्षित बचाया, डूब रहे लोगों के लिए बना देवदूत

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के जबलपुर में गुरुवार को बर्गी डैम हादसे में अभी तक 9 लोगों की मौत हो गई। राहत बचाव कार्य जारी है। हादसे की जानकारी मिलते ही सबसे पहले एक मजदूर ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया था। रेस्क्यू टीम के पहुंचने से पहले ही पुल निर्माण के कार्य में लगे रहमान ने कई लोगों की जिंदगी बचाई थी। अपनी जान जोखिम में डालकर उसने यह अभियान चलाया था।

पुल निर्माण में लगे मजदूर ने बचाई जान- दरअसल, बर्गी बांध में जिस स्थान पर कूज हादसा हुआ उसके कुछ ही दूर पर पुल का निर्माण कार्य जारी था। पुल निर्माण कार्य में लगे मजदूरों ने कूज को डूबते हुए देखा था। इसी दौरान वहां मौजूद एक मजदूर ने अपने जान की परवाह किए



बिना और बिना किसी तरह के संसाधन लोगों की जान बचाने के लिए पानी में कूद गया था।

रमजान ने देखा कूज डूब रहा है- पश्चिम बंगाल के रहने वाले रमजान ने बताया कि उसने देखा कि कूज पानी में डूब रहा है। उसने लोग को बचाने के लिए तत्काल रस्सी लेकर बांध में छलांग लगा दी। उसने रस्सी लेकर लगभग 25 फीट की ऊंचाई से

छलांग लगाई। उसके बाद उसने 6 व्यक्तियों को बाहर निकाला। जिसमें से चार व्यक्ति सुरक्षित थे और दो की मौत हो गई थी।

वहीं, मौके पर मौजूद बिंदु कुमार यादव ने बताया कि हम पश्चिमी चंपारण के रहने वाले हैं। यहां पर लगभग 35 मजदूर काम कर रहे थे। बांध में कूज को अनियंत्रित होता देख उसने पायलट की रूकने की आवाज लगाई थी।

देवदूत बने ये 35 मजदूर, बिना किसी ट्रेनिंग के पानी में कूदे और बचा लाए 12 लोग

बर्गी बांध में जब शुक्रवार को चोख-पुकार मची थी और कूज लहरों में समा रहा था, तब वहां पास ही 'जल जीवन मिशन' के तहत पुल का काम कर रहे करीब 35 मजदूरों ने अपनी जान की परवाह नहीं की। जैसे ही उन्होंने कूज को डूबते देखा, उन्होंने अपने औजार फेंक दिए और प्रोफेशनल रेस्क्यू टीम के आने का इंतजार किए बिना बांध में कूद गए।

बंगाल के रमजान की जांबाजी

इन नायकों में पश्चिम बंगाल के 22 साल के रमजान की कहानी सबसे रोमांचक है। रमजान ने बताया, मैंने नाक को डूबते देखा तो एक पल भी नहीं सोचा। उन्होंने अपने शरीर पर एक रस्सी बांधी और करीब 25 फीट ऊंची चट्टान से उफरते पानी में छलांग लगा दी। रमजान अकेले 6 लोगों को किनारे तक खींच लाए, जिनमें से 4 की जान बच गई।

उप मुख्यमंत्री ने किया प्राकृतिक खेती का निरीक्षण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने आज हरिहर धाम स्थित अपने निजी खेत का भ्रमण कर वहां अपनाई जा रही प्राकृतिक खेती की प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने खेत में इस्तेमाल हो रहे प्राकृतिक खाद और जीवामृत के निर्माण व प्रयोग की प्रक्रिया का बारीकी से अवलोकन किया। श्री शुक्ल ने मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और जल संरक्षण के लिए अपनाने गए विशेष उपायों की सराहना करते हुए कहा कि पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए पारंपरिक कृषि पद्धतियों की ओर लौटना अनिवार्य है। निरीक्षण के दौरान उप मुख्यमंत्री ने उपस्थित सहायकों और कृषि विशेषज्ञों को रसायन मुक्त खेती की तकनीकों की ओर अधिक प्रभावी बनाने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खेती में रसायनों का न्यूनतम उपयोग न केवल लागत कम करता है, बल्कि भूमि की उपजाऊ शक्ति को भी दीर्घकालिक लाभ पहुंचाता है। श्री शुक्ल ने प्राकृतिक कृषि को आधुनिक समय की मांग बताते हुए इसे जन-आंदोलन के रूप में प्रसारित करने की बात कही, ताकि आने वाली पीढ़ियों को शुद्ध आहार और सुरक्षित वातावरण मिल सके।

चुनाव खत्म होते ही नए मिशन पर बीजेपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चार राज्यों में विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद अब भले ही सबको इंतजार नतीजों का है। इस बीच भारतीय जनता पार्टी नए मिशन पर जुट गई है। केंद्र की सत्ताधारी पार्टी अब राजनीतिक गतिविधियों के अगले फेज में संगठनात्मक फेरबदल पर आगे बढ़ रही है। इसके साथ ही शासन से जुड़े बदलाव भी फोकस में हैं। सबसे पहले बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की नई टीम को लेकर विचार-विमर्श चल रहा है।

ऐसी चर्चा है कि मौजूदा टीम के दो-तीन महासचिवों के भी नई टीम में बने रहने की उम्मीद है। हालांकि, नई टीम में ज्यादा फोकस युवा चेहरों पर किया जाएगा। ऐसा इसलिए क्योंकि पार्टी के अध्यक्ष नितिन नवीन खुद करीब 45 साल के हैं। नितिन नवीन की नई टीम चुनने को लेकर हो रही देरी का पता इसी से चलता है कि पार्टी सोच-समझकर कदम उठा रही है, ताकि वह अपनी संगठनात्मक संरचना को चुनौतियों के हिसाब से ढाल सके।

बंगाल में पुनर्मतदान के बीच हिंसा, जमकर बवाल

● बीजेपी और टीएमसी कार्यकर्ता भिड़े, पुलिस ने भांजी लाटियां



कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में दो विधानसभा सीटों के 15 बूथ पर पुनर्मतदान के बीच फाल्टा में हिंसा की खबरें हैं। जानकारी के मुताबिक यहां टीएमसी और बीजेपी के कार्यकर्ता आपस में भिड़ गए। इसके बाद लोगों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को लाटियां भांजी पड़ी। आपको बता दें कि फाल्टा सीट पर



प्रदर्शन का विरोध करने लगे। इसपर बीजेपी और टीएमसी के कार्यकर्ताओं में हाथापाई हो गई। रिपोर्ट के मुताबिक पहले से ही स्थिति को तनावपूर्ण देखते हुए इस इलाके में सीआरपीएफ और आरएफए की तैनाती की गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक इस प्रदर्शन में महिलाएं भी बड़ी संख्या में शामिल थीं। एक स्थानीय महिला ने कहा कि टीएमसी

के इसराफिल चौधरी ने धमकी दी कि अगर वे जीत जायेंगे तो उनके घर जला देंगे और खुनी खेल होगा। महिला ने कहा कि उन्होंने टीएमसी को वोट दिया है और इसके बाद भी उन्हें धमकाया जा रहा है। बता दें कि आज यानी शनिवार को मगराहाट पश्चिम और डायमंड हार्बर के 15 बूथों पर दोबारा मतदान हुआ है।

हिंद महासागर में स्थिरता के लिए बन गया प्लान

● भारत-म्यांमार ने मिलाया हाथ, मिलकर करेंगे निगहबानी

चार दिवसीय दौर पर नेवी चीफ एडमिरल दिनेश त्रिपाठी



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी 2 मई से 5 मई तक म्यांमार के चार दिवसीय आधिकारिक दौर पर हैं। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य भारत और म्यांमार के बीच समुद्री सहयोग और रक्षा संबंधों को और मजबूत करना है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, इस यात्रा के दौरान नौसेना प्रमुख

म्यांमार के शीर्ष सैन्य और रक्षा नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय बैठकें करेंगे। इनमें म्यांमार सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ जनरल ये विन ऊ, रक्षा मंत्री जनरल यू हतुन आंग और म्यांमार नौसेना के प्रमुख एडमिरल ह्तेइन विन शामिल हैं। इन बैठकों में दोनों देशों के बीच चल रहे समुद्री सहयोग की समीक्षा की जाएगी।

दोनों देशों के बीच होते रहते हैं नौसेना के अभ्यास- भारत और म्यांमार की नौसेनाएं नियमित रूप से कई माध्यमों से सहयोग करती रही हैं। इनमें डिफेंस कोऑपरेशन मीटिंग, स्टाफ चैंसलर, प्रशिक्षण आदान-प्रदान और ऑपरेशनल गतिविधियां शामिल हैं। दोनों देशों के बीच इंडिया-म्यांमार नेवल एक्सरसाइज (आईएमएनईएक्स) और इंडो-म्यांमार कोऑर्डिनेटेड पेट्रोल (आईएमसीओआर) जैसे अभ्यास भी होते रहे हैं। इसके अलावा पोर्ट विजिट और हाइड्रोग्राफिक सर्वे भी सहयोग का हिस्सा हैं। म्यांमार ने कई अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में साथ दिया है।

डॉ. जवाहर कर्नावट लंदन में हुए सम्मानित

लंदन। यू.के. में पिछले 25 वर्षों से भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत सुप्रसिद्ध संस्था 'वातायन' द्वारा हाउस आफ लॉर्ड्स, लंदन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह में भोपाल के प्रखर लेखक एवं वक्ता डॉ. जवाहर कर्नावट को वातायन शिखर सम्मान ब्रिटिश संसद के लार्ड उदय नागराजु ने प्रदान किया। इसके साथ ही वर्ष 2025 का वातायन शिखर सम्मान सुश्री सुलेखा चोफरा तथा साहित्य सम्मान ब्रिटेन की लेखिका डॉ.अचला शर्मा तथा शैल अग्रवाल जी को प्रदान किया गया। प्रारंभ में वातायन की संयोजक एवं सुप्रसिद्ध लेखिका दिव्या माथुर ने लॉर्ड नागराजु तथा भारतीय दूतावास की प्रथम सचिव डॉक्टर सलोनी सहाय का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन यूके हिंदी समिति के संस्थापक श्री पद्मेश गुप्त ने किया। इस



अवसर पर आईसेक्ट प्रकाशन द्वारा प्रकाशित डॉ. अरुण अजीतसरिया द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रवासी साहित्यकार 'दिव्या माथुर' तथा 'रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के प्रवासी भारतीय साहित्य शोध केंद्र द्वारा डॉ. वंदना मुकेश के संपादन में प्रकाशित 'ब्रिटेन की चयनित रचनाएं' पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम में डॉ.

कर्नावट ने लार्ड उदय नागराजु को विश्व रंग की पुस्तिका, श्री पद्मेश गुप्त को 'विश्व में हिंदी' पुस्तक भेंट की। आभार प्रदर्शन वातायन की अध्यक्ष श्रीमती मीरा गौतम ने किया।

संजय गांधी अस्पताल के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग में मरीजों को मिल रही हैं अत्याधुनिक सुविधाएं

उप मुख्यमंत्री ने स्थापित अत्याधुनिक मशीनों का लिया जायजा

भोपाल। विद्य क्षेत्र के सबसे बड़े चिकित्सा केंद्र, संजय गांधी अस्पताल के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग ने चिकित्सा क्षेत्र में एक नई और उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। हाल ही में स्थापित अत्याधुनिक मशीनों की सहायता से विभाग ने एक माह से भी कम



समय में 61 से अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने स्वयं विभाग का निरीक्षण कर इन उपलब्धियों और स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने उन्नत ईआरसीपी, एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड, कोलेन्जियरोस्कोपी और लिथोट्रिप्सी जैसी मशीनों की कार्यप्रणाली का अवलोकन किया और विभाग की दक्षता की सराहना की।

पर्यवेक्षकों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर मतदान

निर्वाचन आयोग के एक अधिकारी ने बताया कि पुनर्मतदान का आदेश दोनों विधानसभा क्षेत्रों के निर्वाचन अधिकारियों और पर्यवेक्षकों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर दिया गया। मगराहाट पश्चिम सीट पर तृणमूल कांग्रेस के मोहम्मद समीम अहमद मोल्ला का मुकाबला भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी गौर सुंदर घोष से है, जबकि कांग्रेस के अब्दुल मजीद हलदर और इंडियन सेक्टर फ्रंट (आईएसएफ) के अब्दुल अजीज अल हसन भी मैदान में हैं। डायमंड हार्बर सीट पर तृणमूल के पत्रा लाल हलदर, भाजपा के दीपक कुमार हलदर को चुनौती दे रहे हैं। कांग्रेस के गौतम भट्टाचार्य और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के समर नाइया समेत कई अन्य प्रत्याशी भी इस सीट पर किस्मत आजमा रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आरोप लगाया कि डायमंड हार्बर लोकसभा क्षेत्र की इन दोनों विधानसभा सीट के कुछ मतदान केंद्रों पर बड़े पैमाने पर चुनावी धांधली हुई थी। डायमंड हार्बर लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी करते हैं। निर्वाचन आयोग ने आरोपों की जमीनी स्तर पर जांच के लिए अपने विशेष पर्यवेक्षक सुब्रत गुप्ता को नियुक्त किया था।

इन्वेस्ट इंडिया के आंकड़ों में मध्यप्रदेश रोजगार सृजन में देश का अग्रणी राज्य

भोपाल (नप्र)। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग की राष्ट्रीय निवेश प्रोत्साहन एवं सुविधा एजेंसी इन्वेस्ट इंडिया द्वारा जारी ताजा निवेश आंकड़ों में मध्यप्रदेश रोजगार सृजन के मामले में देश में अग्रणी राज्य के रूप में उभरा है। यह जानकारी भारत सरकार द्वारा जारी आधिकारिक जानकारी में सामने आई है, जो देश में निवेश के बढ़ते दायरे और राज्यों की भूमिका को रेखांकित करती है।

राष्ट्रीय रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि रोजगार सृजन में मध्यप्रदेश समूचे देश में आंध्र प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और महाराष्ट्र को पीछे छोड़कर शीर्ष स्थान पर रहा है। यह उपलब्धि राज्य में विकसित हो रहे निवेश अनुकूल वातावरण, अधोसंरचना विस्तार और उद्योगोन्मुख नीतियों का परिणाम मानी जा रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में वर्ष-2025 को म.प्र. में रोजगार और उद्योग वर्ष घोषित किया गया। मध्यप्रदेश में निवेश

संवर्धन को प्राथमिकता दी गई है। देश और विदेश में आयोजित इन्वेस्टर मीट, रोड-शो और संवाद कार्यक्रमों के माध्यम से निवेशकों से सीधा जुड़ाव स्थापित किया गया है। साथ ही रोजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव की श्रृंखला के माध्यम से प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार सुनिश्चित किया गया है। इन्वेस्ट इंडिया के ये आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के सकल प्रयासों से मध्यप्रदेश न केवल निवेश आकर्षित करने में सक्षम है, बल्कि उसे प्रभावी रूप से रोजगार सृजन में भी परिवर्तित कर रहा है। राज्य अब देश के उभरते औद्योगिक और रोजगार केंद्र के रूप में अपनी पहचान सुदृढ़ कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का विशेष फोकस निवेश को रोजगार में परिवर्तित करने पर रहा है। इसी क्रम में कौशल उन्नयन पर विशेष ध्यान देते हुए उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप आईटीआई और पॉलिटेक्निक संस्थानों में प्रशिक्षण को सुदृढ़ किया जा रहा है।

भोपाल में बारिश, रायसेन में वेयरहाउस की छत उड़ी सीहोर में ट्रैक्टर-ट्रॉलियों में रखी फसल भीगी, बालाघाट में पेड़ गिरा, बाइक दबी



इटारसी में आंधी-बारिश, पेड़-लाइनों टूटीं, टंकी गिरने से टला हादसा

नर्मदापुरम जिले के इटारसी में शनिवार शाम अचानक मौसम बदल गया। तेज आंधी और बारिश से कई जगह पेड़ गिर और बिजली लाइनें टूट गईं, जिससे जनजीवन प्रभावित हुआ। सिंधी कॉलोनी और अन्य इलाकों में रास्ते बाधित रहे। सराफा बाजार में 5000 लीटर की पानी की टंकी सड़क पर गिर गई, लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ। प्रशासन ने लोगों से सतर्क रहने की अपील की है।

हरदा में आंधी-तूफान के साथ बूंदबांदी, पेड़ गिरे

हरदा में शनिवार शाम अचानक मौसम बदल गया। तेज आंधी-तूफान के साथ बूंदबांदी हुई, जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। वहीं कई जगह पेड़ गिरने की खबरें सामने आई हैं, जिससे जनजीवन प्रभावित हुआ है।

डिंडोरी में आंधी-तूफान के साथ तेज बारिश, हवाएं चलीं- डिंडोरी में शनिवार शाम करीब 5 बजे के बाद अचानक मौसम बदल गया। आंधी-तूफान के साथ तेज बारिश

का दौर शुरू हुआ, जो अब भी जारी है। इस दौरान हवा की रफ्तार करीब 25 से 30 किमी प्रति घंटा रही। अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली है।

भोपाल के रातीबड़ में बरगद का पेड़ मकान पर गिरा- भोपाल के रातीबड़ इलाके के बेरखेड़ी में तेज आंधी के दौरान एक विशाल बरगद का पेड़ मकान पर गिर गया। हादसे में घर को नुकसान पहुंचा है। मौके पर स्थानीय लोग जुटे हैं, फिलहाल किसी जनहानि की सूचना नहीं है।

भोपाल में मानस भवन इलाके से आदिवासी बस्ती हटाई

अतिक्रमण तोड़ने का विरोध कर रहे लोगों पर हल्का लाठी चार्ज, कांग्रेस नेता हिरासत में

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पॉलिटेक्निक चौराहा स्थित मानस भवन के पास से जिला प्रशासन की टीम ने आदिवासी बस्ती हटा दी है। पुलिस ने शुरुवार रात से ही इलाके की घेराबंदी कर दी थी। शनिवार सुबह बैरिकेडिंग कर आवाजाही पूरी तरह बंद कर दी गई। सुबह 7 बजे शुरू की गई अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई दोपहर करीब 3 बजे तक चली। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, पूर्व मंत्री पीसी शर्मा, नगर निगम नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी और आसिफ जकी सहित कई कांग्रेस नेताओं ने मौके पर पहुंचकर कार्रवाई का विरोध किया। धरने पर बैठ गए। एक युवक टावर पर चढ़ गया, जिसे पुलिस ने समझाकर उतारा।

जब हंगामा बढ़ने लगा, तो पुलिस एक्शन मोड में



आ गई। हल्का लाठी चार्ज किया। लेकिन जब कांग्रेसी नहीं हटे तो पुलिस ने शबिस्ता जकी, आसिफ जकी समेत कुछ लोगों को हिरासत में ले लिया। जिन्हें बाद में छोड़ दिया गया।

दरअसल, यहां से 27 परिवारों को हटाकर भौरी, कलखेड़ा और मालीखेड़ी में शिफ्ट किया जाना है। करीब 70 साल पुरानी इस बस्ती को हटाने के लिए 95 अधिकारी-कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई थी।

पुलिस ने लाठीचार्ज किया, कांग्रेस कार्यकर्ता समेत कई लोग हिरासत में- पुलिस ने लाठीचार्ज कर कांग्रेस कार्यकर्ता समेत कई लोगों को हिरासत में लिया है। बस्ती के लोगों और पुलिस के बीच झड़प हुई। कुछ लोगों ने पुलिस पर हमला किया, पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की।

नर्मदा के घाटों पर अब नहीं मिलेंगे भिखारी

कलेक्टर के आदेश पर धारा 163 लागू, भीख के बजाय मिलेगा कूपन

नर्मदापुरम (नप्र)। शहर में मां नर्मदा के विभिन्न घाटों पर अब भिक्षावृत्ति पर सख्ती से रोक लगा दी गई है। इसके निर्देश कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने दिए थे, जिस पर सिटी मजिस्ट्रेट ने आदेश जारी कर दिए हैं। नर्मदा नदी के तीन प्रमुख घाट सेठानी घाट, कोरी घाट और पर्यटन घाट पर अब भीख मांगना प्रतिबंधित कर दिया गया है।

की इस पहल को शहर के गणमान्य नागरिक, व्यापारी बंधु और आमजन ने सराहनीय बताया है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने शहर को भिखारी मुक्त बनाने में अपना भी योगदान देने की अपील की है। जनप्रतिनिधियों ने लोगों से अपील की है कि शहर में गली मोहल्ला और दुकानों पर जाकर भीख मांगने वाले को भीख देना बंद कर दें, उनके



भिखावृत्ति और उससे जुड़ी सभी गतिविधियां प्रतिबंधित रहेंगी। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत उपखंड मजिस्ट्रेट देवेन्द्र प्रताप सिंह ने आदेश जारी किए।

पुनर्वास पर फोकस- एनएचआरसी ने गरीब, अशिक्षित बच्चों, महिलाओं और दिव्यांग भिक्षुकों के संरक्षण और पुनर्वास के लिए एडवाइजरी जारी की थी। उसी के तहत कलेक्टर सोमेश मिश्रा के निर्देश पर यह कार्रवाई की है। नगर निकाय और अन्य विभाग मिलकर भिक्षावृत्ति में लगे लोगों का उन्मूलन करेंगे। इन लोगों के लिए आश्रय, स्वास्थ्य और शिक्षा का इंतजाम कर समाज पुनर्वास सुनिश्चित किया जाएगा। यह आदेश भिक्षावृत्ति खत्म करने के साथ-साथ भिक्षुकों की सुरक्षा और पुनर्वास दोनों पर फोकस करता है।

आमजन ने बताया सराहनीय- कलेक्टर सोमेश मिश्रा

लिये एक सुनिश्चित स्थान बनाया जाए जहां उन्हें भोजन मिल सके।

5 रुपए में भरपेट खाना- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजना है, जिसके तहत गरीबों, मजदूरों, और बेसहारा लोगों को मात्र 5 में भरपेट पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाता है। इस के माध्यम से भी दान पुण्य कर सकते हैं। किसी को भी नगद रूपये न देकर पांच रुपए का कूपन देकर भोजन करा सकते हैं। जब नगद राशि नहीं मिलेगी तो शहर में भीख मांगने वालों की संख्या लुप्त हो जाएगी।

नर्मदा घाट में सैकड़ों भिखारी- बता दें कि नर्मदा घाट पर सैकड़ों की संख्या में भीख मांगने वाले सक्रिय हैं, जिनमें सर्वाधिक भीख मांगने वाले सेठानी घाट, पर्यटन घाट, कोरी घाट और विवेकानंद घाट पर सक्रिय रहते हैं। जिनके पुनर्वास के प्रयास शुरू हो रहे हैं।

मजदूर दिवस पर भोपाल प्रेस क्लब के तत्वावधान में विशेष चर्चा हुई

भोपाल। भोपाल प्रेस क्लब के तत्वावधान में आज मजदूर दिवस पर विशेष बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल ने की, मुख्य वक्ता थे बीबीसी के पूर्व संवाददाता सलमान रावी। विषय प्रवर्तन किया वरिष्ठ पत्रकार सतीश सक्सेना ने।

मुख्य वक्ता बीबीसी के पूर्व संवाददाता सलमान रावी ने अखबारों और पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज पत्रकारिता भीड़ का स्वरूप ले चुकी है। मूल्यों वाली पत्रकारिता समाप्ति कि ओर है। वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल ने श्रम दिवस और पत्रकारिता के साथ ही सामाजिक परिदृश्य में बदलाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने अखबारों और न्यूज चैनलों में आये परिवर्तन का जिक्र किया।

वरिष्ठ पत्रकार अलीम बज्जी ने पत्रकारिता में श्रम विषय पर विस्तार से चर्चा की। उनका कहना था कि आज अखबारों में



श्रम का पूरा स्वरूप ही बदल गया है। दुर्भाग्य यह है कि पत्रकारिता में गैर मूल्य का दब्दबा बढ़ा है, सामाजिक सरोकारों का अभाव हो गया है। इन्वेस्टीगेशन जर्नालिज्म खत्म हो रही है। सरकारों ने पत्रकार संगठनों में बिखराव कि नीतियां अपनाई हैं। कई संगठन बन गये हैं, लेकिन वो श्रमिक या कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करने के बजाय मालिकों और सरकारों के प्रतिनिधित्व हो गये हैं। इसीलिए अब उनके अधिकारों की बात नहीं होती। उनके

लिए संघर्ष नहीं दिखता। अंत में प्रेस क्लब के अध्यक्ष संजय सक्सेना ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार नाफिर हुसैन, ओ पी श्रीवास्तव, विजय शर्मा, गोपी बलवानी, डी एन पाण्डेय, जेपी खरे, रुपेश गुप्ता, ए भगवान, प्रीण कुमार, मो. परवेज, मनोभा सक्सेना, सुनील कुमार, हकम सिंह, सचिन नाथ, विजय वामी, अरुण पटेल, नन्द किशोर, गोपाल जैन राजेवा राठौर सहित अनेक पत्रकार साथी उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश पुलिस की बड़ी कार्यवाही

उज्जैन एवं भोपाल पुलिस ने ट्रैक्टर एवं चार पहिया वाहन धोखाधड़ी करने वाले गिरोहों का किया भंडाफोड़

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में संपत्ति संबंधी अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश पुलिस को दो अलग-अलग प्रकरणों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। उज्जैन एवं भोपाल पुलिस द्वारा संगत धोखाधड़ी गिरोहों का भंडाफोड़ करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार कर 20 ट्रैक्टर, 1 एकसयवृद्धी, 02 बोलरो एवं 02 इनोवा कार सहित लगभग 2 करोड़ 60 लाख रुपए से अधिक की संपत्ति जप्त की गई है।

उज्जैन-ट्रैक्टर धोखाधड़ी गिरोह का पर्दाफाश, 20 ट्रैक्टर (कीमत 1 करोड़ 80 लाख रुपए) जप्त- जिले के थाना भाटपचलाना पुलिस द्वारा किसानों के साथ ट्रैक्टर धोखाधड़ी करने वाले एक शांति आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से लगभग 1 करोड़ 80 लाख रुपये मूल्य के 20 ट्रैक्टर जप्त किए गए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, थाना भाटपचलाना क्षेत्र में किसानों द्वारा ट्रैक्टर धोखाधड़ी एवं ट्रैक्टर वापस न करने की शिकायतें लगातार प्राप्त हो रही थीं। मामले की गंभीरता को देखते हुए अपराध पंजीबद्ध कर तत्काल विशेष टीम गठित कर विवेचना प्रारंभ की गई।

30 अप्रैल को तकनीकी साक्ष्यों एवं मुखबिर सूचना के आधार पर आरोपी रफीक गिफा गनी मोहम्मद निवासी ग्राम माधोपुरा को गिरफ्तार किया गया। आरोपी के कब्जे से पुलिस ने उज्जैन, इंदौर, धार एवं रतलाम जिलों के



विभिन्न क्षेत्रों से 1 करोड़ 80 लाख रुपये मूल्य के 20 ट्रैक्टर जप्त किए हैं।

विवेचना के दौरान यह तथ्य सामने आया कि आरोपी ग्रामीण क्षेत्रों के भोले-भाले किसानों को गिफा गनी मोहम्मद उज्जैन पर अधिक मासिक किराया देने का लालच देता था। इस प्रलोभन में आकर किसान अपने ट्रैक्टर आरोपी को सौंप देते

थे। आरोपी ट्रैक्टरों को अपने कब्जे में लेकर उन्हें अन्य जिलों के दूरस्थ क्षेत्रों में बेच देता था गिरवी रख देता था। वह न तो किसानों को कोई किराया देता था और न ही ट्रैक्टर वापस करता था। गिरफ्तारी से बचने के लिए आरोपी लगातार अपने मोबाइल नंबर बदलता रहता था तथा अपने निवास स्थान से भी फरार रहता था।

भोपाल- चार पहिया वाहन धोखाधड़ी गिरोह का भंडाफोड़, 05 वाहन (कीमत 80 लाख) जप्त

जिले के थाना अयोध्यानगर पुलिस ने किराए पर वाहन लगवाने का झांसा देकर चार पहिया वाहन बेचने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया। प्रकरण में 01 आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 1 महिन्द्रा एकसयवृद्धी, 02 बुलेरो एवं 02 इनोवा कार सहित कुल 05 चार पहिया वाहन (कीमत लगभग 80 लाख रुपये) जप्त किए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार फरियादी ने शिकायत दर्ज कराई थी कि आरोपी द्वारा वाहन को एयरपोर्ट पर किराए से लगवाने का झांसा देकर अनुबंध के माध्यम से वाहन लिया गया तथा प्रारंभिक अवधि में किराया देने के बाद वाहन को भोपाल लाकर अन्य व्यक्तियों को सस्ते दामों पर बेच दिया गया। शिकायत पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

विवेचना में सामने आया कि आरोपी अपने साथियों के साथ मिलकर ट्रैकमगढ़, सागर एवं दमोह जैसे जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों के वाहन मालिकों को सरकारी विभाग में वाहन लगवाकर अधिक किराया देने का लालच देते थे। उसके बाद वाहन को भोपाल लाकर गिरोह उन्हें मजबूरी बताकर कम कीमत में अन्य व्यक्तियों को बेच देते थे। गिरोह के अन्य आरोपियों की तलाश जारी है तथा प्रकरण में और भी वाहनों की बरामदगी की संभावना है।

मध्यप्रदेश पुलिस आमजन, विशेषकर किसानों एवं वाहन मालिकों से अपील करती है कि किसी भी प्रकार के लालच या प्रलोभन में आकर अपनी संपत्ति अज्ञात व्यक्तियों को न सौंपें। वाहन किराए पर देने से पूर्व संबंधित व्यक्ति की पूर्ण जानकारी एवं सत्यापन अवश्य करें। किसी भी सदिग्ध गतिविधियों की सूचना तत्काल पुलिस को दें।

कहानी

रमेश कुमार 'रिपु'



रा यपुर के छोटापारा मोहल्ले की गलियों भले ही संकरी थी मगर यहाँ रहने वाले लोगों के दिल अक्सर खुले रहते थे। इसी मोहल्ले में आमने-सामने दो मकान थे। एक मैं रहते थे आनंद तिवारी और दूसरे में रमजान अली।

दोनों की दोस्ती पूरे मोहल्ले में मिसाल मानी जाती थी। दोनों के धर्म अलग थे, पर रिश्ते में कोई दूरी नहीं थी। सुबह की चाय कभी रमजान अली के घर होती तो शाम की गपशप आनंद तिवारी के बरामदे में। इंद पर रमजान अली के घर से कटोरा भर सेबदवा आनंद तिवारी के घर पहुँच जाता, और होली पर तिवारी जी की पत्नी अपने हाथ की गुजिया रमजान के बच्चों के लिए भेजना नहीं भूलती।

मगर इस दोस्ती के बीच एक अजीब विडम्बना थी। दोनों के बच्चे एक-दूसरे से अक्सर उलझ पड़ते थे। धर्म और रीति-रिवाजों को लेकर उनकी छोटी-छोटी तकरारें कई बार बड़े झगड़े में बदल जाती थीं। रमजान अली का बेटा जावेद और आनंद तिवारी का बेटा समीर छोटी-छोटी बातों पर भिड़ जाते। तुम लोग काफिर हो हमारे त्योहारों में मत आया करो।- जावेद ताने देता।

समीर भी पीछे नहीं रहता तो तुम लोग हमारी होली में क्यों नहीं आते? एक दिन मोहल्ले की नाली से बहकर मुर्गी की हड्डि आनंद तिवारी के घर के सामने आकर अटक गई। यह देखते ही समीर तिवारी भड़क उठा।

ये जानबूझकर किया है। वह चिल्लाया। उधर से जावेद भी आ गया। हमने कुछ नहीं किया, उसने जवाब दिया।

समीर ने गुस्से में कहा कुड़ेदान में फेंक सकते थे, मगर नाली में फेंका ताकि हमारे घर के सामने आए। जानबूझकर किया है।

बात बढ़ते, बढ़ते दोनों में धक्का मुक्की तक पहुँच गई। मोहल्ले वालों को बीच बचाव करना पड़ा। दोनों घरों के बड़े लोग यह सब देखकर सिर हिलाते रहते। मोहल्ले के लोग कई बार इन बच्चों की लड़ईयें देखते रहे।

एक दिन चाय पीते हुए आनंद तिवारी ने कहा समझा में नहीं आता रमजान, हमने तो कभी धर्म को दीवार नहीं बनने दिया।

रमजान अली ने मुस्कुराते हुए कहा समय बदल गया है दोस्त, अब लोग पहले धर्म देखते हैं, ईंसान बाद में। समय लगेगा दोस्त, एक दिन उन्हें भी समझ आएगा।-

रमजान अली और आनंद तिवारी की दोस्ती इतनी गहरी कैसे बनी यह बाल मोहल्ले में बहुत कम लोग जानते थे। क्यों कि यह कहानी कई साल पुरानी थी।

कई साल पहले की बात है रात का समय था। छोटापारा की उस रात में अचानक आग उत्तर आई थी। मोहल्ले में अफरा-तफरी मच गई थी। दुकानें बंद हो गई थी, गलियों में डर का माहौल था। गलियों में भागते लोगों की आवाजें, दूर जलते टायरों का धुआँ और बंद दरवाजों के पीछे सहमी साँसें सब कुछ एक साथ धरती रूँध था। अफरा- तफरी मच गई थी। हवा में डर और अफवाहें तैर रही थीं। दंगा हो गया दंगा हो गया। किसी ने चिल्लाकर कहा 'छोटापारा का माहौल एकदम बदल गया। जो मोहल्ले शाम तक हँसी-मजाक से भरा रहता था, अब वहाँ सनाटा

था। और उसी भयभीत रात में एक घर के भीतर एक और संघर्ष शुरू हो चुका था, जिंदगी और मौत के बीच। रमजान अली के घर से दर्द भरी कराह सुनाई दे रही थी। फरीदा की प्रसव पीड़ा बढ़ती जा रही थी और बाहर पूरा मोहल्ले आग और अफवाहों से घिरा हुआ था।

रमजान अली के घर के अंदर घबराहट मची हुई थी। उनकी पत्नी फरीदा दर्द से कराहते हुए कहा, रमजान लगता है समय आ गया है।

रमजान अली घबरा गए। फरीदा गर्भवती थी और उसे अस्पताल ले जाना जरूरी था। लेकिन बाहर दंगे की वजह से कोई वाहन नहीं मिल रहा था। रमजान अली दरवाजे पर खड़े होकर परेशान नजर से सड़क की ओर देख रहे थे। तभी गली में एक टैक्सी की हेडलाइट दिखाई दी। टैक्सी आकर उनके घर के सामने रुकी। ड्राइवर सीट से आनंद तिवारी उतरे।

उतरते ही उन्होंने पूछा, क्या हुआ रमजान इतनी घबराहट क्यों है? रमजान अली ने कहा फरीदा को दर्द शुरू हो गया है, मगर बाहर हालात देख रहे हो। आनंद तिवारी ने बिना एक पल गंवाए कहा, चलो, जल्दी भाभी को लेकर आओ।

रमजान अली चौंक गए। और बाहर देगा है।

आनंद तिवारी ने मुस्कुराकर कहा रमजान भाई, दंगे मजहब के नाम पर होते हैं, मगर बच्चे हमेशा ईंसानियत के घर में ही जन्म लेते हैं। दंगा ईंसानों ने किया है, ईंसानियत ने नहीं।

कुछ ही मिनट में फरीदा को टैक्सी में बैठाया गया। टैक्सी सुनसान सड़कों से होते हुए अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी। अस्पताल पहुँचते ही डॉक्टरों ने तुरंत फरीदा को ऑपरेशन थिएटर में ले लिया।

कुछ देर बाद डॉक्टर बाहर आए। मरीज का बच्चा खून बह गया है, तुरंत ब्लड चाहिए। रमजान अली के चेहरे का रंग उड़ गया। तभी पीछे से आनंद तिवारी की आवाज़ आई, डॉक्टर साहब मेरा ब्लड टेस्ट कर लीजिए।

रमजान अली ने उन्हें देखा। आनंद तिवारी ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, भाई जान, अगर मेरा खून फरीदा भाभी को लग सकता है तो ले लीजिए, यह मत सोचिए कि यह किसी हिंदू का खून है। खून का रंग पूछकर नसें नहीं चलती रमजान भाई यह बस दिल से दिल तक रास्ता बना लेता है।

रमजान अली कुछ क्षण तक उन्हें देखते रहे। फिर मन ही मन सोचा मैं इसे हिंदू समझता था यह तो ईंसानियत से भी ऊँचा निकल।

कुछ देर बाद आनंद तिवारी का खून फरीदा को चढ़ाया गया। और उसी रात फरीदा ने एक बेटे को जन्म दिया। रमजान अली ने बच्चे को गोद में लेकर कहा, इसका नाम जावेद होगा।

उस रात के बाद शाम ढलते ही छोटापारा की गली में एक छोटा सा दूध रोज बनता था। आनंद तिवारी और रमजान अली दरवाजे पर चारपाई डालकर बैठते

और चाय के दो कपों के साथ दिनभर की बात करते। मोहल्ले वाले मजाक में कहते इन दोनों की दोस्ती चाय से भी ज्यादा गरम है।

धीरे-धीरे रमजान अली और आनंद तिवारी के बीच एक ऐसा रिश्ता बन गया था जो खून से भी गहरा था। साल गुजरते गए। दोनों परिवार पड़ोसी की तरह नहीं, रिश्तेदारों की तरह रहने लगे। लेकिन अजीब बात यह थी कि उनकी दोस्ती जितनी गहरी थी, उनके बच्चों की नोक-झोंक उतनी ही ज्यादा थी।

कुछ दिनों बाद रमजान अली अस्पताल गए और अंगदान का फॉर्म भर आए। दिल, किडनी, लीवर और आँखें सब दान करने की सहमति दे दी। घर में सबने विरोध किया। लेकिन रमजान अली हँसकर बोले मरने के बाद शरीर तो मिट्टी हो जाता है, अगर किसी की जिंदगी बच जाए तो क्या बुरा है?

उस शाम उन्होंने मजाक में आनंद तिवारी से कहा, अगर कभी तुझे दिल की जरूरत पड़े तो मेरा दिल ले लेना।

दोनों दोस्त देर तक हँसते रहे। उन्हें क्या पता था कि एक दिन यही मजाक सच बन जाएगा। कुछ समय बाद एक सड़क दुर्घटना में रमजान अली की मौत हो गई। पूरा मोहल्ले शोक में डूब गया। आनंद तिवारी जैसे अंदर से टूट गए थे। लेकिन नियति ने अभी एक और मोड़ तैयार कर रखा था। कुछ ही दिनों बाद आनंद तिवारी को दिल का गंभीर दौरा पड़ा।

डॉक्टरों ने कहा इनकी जान बचाने के लिए हार्ट ट्रांसप्लांट करना पड़ेगा। जब डॉक्टर की सूची देखी गई तो एक नाम सामने आया रमजान अली। यह सुनकर आनंद तिवारी की आँखें भर आईं। उन्हें अपने दोस्त की वह हँसी मजाक वाली बात याद आई अगर कभी तुझे दिल की जरूरत पड़े तो मेरा दिल ले लेना।- लेकिन असली मुश्किल अभी बाकी थी। रमजान अली के बेटे जावेद ने साफ मना कर दिया।

मैं नहीं चाहता कि मेरे अम्मा का दिल आनंद तिवारी को दिया जाए। डॉक्टरों ने समझाने की कोशिश की। तुम्हारे पिता ने स्वयं अंगदान की सहमति दी थी।

जावेद ने कटोर स्वर में कहा जो भी हो, मैं यह नहीं होने दूँगा। यह खबर मोहल्ले में आग की तरह फैल गई। कुछ लोग जावेद का समर्थन कर रहे थे ठीक कर रहा है। अपने बाप का दिल किसी हिंदू को क्यों दे? कोई रिश्तेदार होता या फिर अपनी बिरादरी का होता अथवा जान पहचान का तो बात कुछ और थी।

कुछ लोग कह रहे थे, अरे यह तो उनके आखिर पिता की आखिर इच्छा थी। तनाव बढ़ता जा रहा था। उधर अस्पताल में आनंद तिवारी की हालत बिगड़ती जा रही थी एक दिन समीर तिवारी गुस्से में जावेद के घर पहुँच गया।

तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? उसने ऊँची आवाज़ में कहा। जावेद भी भड़क गया।

क्यों कर रहा है? क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे अम्मा का दिल तुम्हारे घर में धड़के...

समीर ने कहा तुम्हें तो गर्व होना चाहिए।

जावेद की आँखें लाल हो गईं। गर्व? तुम्हें पता है, मेरे अम्मा को कबाब कितना पसंद समीर चुप रहा। जावेद आगे बोला और तुम लोग क्या खिलाओगे? खिचड़ी। वो भी ईद के दिन।-

उसकी आवाज़ भारी गई। उनका दिल यही कहेगा, मुझे किस शरीर में लगा दिया मेरी सारी ख्वाहिशों का जानाज़ा निकाल दिया।

यह सुनकर वहाँ खड़े सभी लोग चुप हो गए। तभी आनंद तिवारी की बेटी नेहा आगे आई। उसने शांत स्वर में कहा जावेद भाई आप एक बात क्यों नहीं सोचते?

सबकी नजरें उसकी ओर उठ गईं। नेहा ने कहा, आपके अम्मा का दिल किसी हिन्दू के सीने में नहीं लगेगा। वह थोड़ी देर रुकी।

बल्कि एक हिन्दुस्तानी के सीने में लगेगा। कमरे में सनाटा छा गया। नेहा की आवाज़ फिर गुँजी, क्या आप हिन्दुस्तानी नहीं हैं..?

तभी फरीदा धीरे से बोली, जावेद तुम्हें एक बात बतानी है। फिर उन्होंने दंगे वाली रात की पूरी कहानी सुनाई। कैसे आनंद तिवारी उन्हें अस्पताल ले गए थे और कैसे उन्होंने अपना खून देकर उनकी जान बचाई थी। फिर उन्होंने कहा, अगर आनंद तिवारी उस दिन मुझे खून नहीं देते, तो शायद मैं भी नहीं बचती, और तुम भी इस दुनिया में नहीं होते।

जावेद की आँखों से आँसू बहने लगे। उसे पहली बार अपने अम्मा और आनंद तिवारी की दोस्ती का असली राज समझ आया। उसे अपने अम्मा की बातें याद आने लगी ईंसानियत सबसे बड़ा मजहब है।

कुछ देर बाद उसने धीमी आवाज़ में कहा, अगर मेरे अम्मा का दिल किसी को जिंदगी दे सकता है तो उसे रोके जाने में कौन होता है..?

डॉक्टरों को तुरंत खबर दी गई। ऑपरेशन की तैयारी शुरू हो गई। कई घंटे चले उस कठिन ऑपरेशन के बाद आखिरकार डॉक्टर बाहर आ कर कहा, ऑपरेशन सफल रहा।

कुछ दिनों बाद आनंद तिवारी अस्पताल से बाहर आए। जावेद उनके सामने खड़ा था। दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। फिर आनंद तिवारी ने जावेद को गले लगा लिया। उनकी आँखों में आँसू थे। धीरे से बोले - तुम्हारे अम्मा जब भी शाम को आते थे, कहते थे, चलो आनंद, एक कप चाय हो जाए। अब लगता है, मेरे सीने में धड़कता यह दिल हर शाम वही बात दोहरा रहा है। रमजान फिर से मेरे साथ बैठकर चाय पीना चाहता है। जावेद मुस्कुरा पड़ा।

उद दिन दोनों धर्मा की बहसें खत्म हो गईं, क्योंकि एक दिल दो घरों के बीच धड़क रहा था। छोटापारा मोहल्ले ने एक सच्चाई फिर से समझी, धर्म अलग हो सकता है, रिवाज अलग हो सकते हैं, लेकिन दिल की धड़कन सिर्फ एक भाषा समझती है, ईंसानियत की। और सच यही है, आखिर दिल है हिन्दुस्तानी।

त्यंग

दिल की हसरत झालमुड़ी खाने की

सुरेश सौरभ

लेखक व्यंग्यकार हैं।

उस दिन बाजार से सब्जी लेकर लौट रहा था। तभी मेरी नजर सामने झालमुड़ी की एक दुकान पर पड़ी। जी ललचा गया। जल्दी-जल्दी दुकान के करीब आया। अपनी जेब टटोली। दस का सिक्का बरामद हुआ। दुकानदार की ओर दस का सिक्का बढ़ाते हुए बोला-दस की झालमुड़ी देना भाई। झालमुड़ी वाला ऊपर से नीचे तक मुझे अजीब दृष्टि से देखने लगा। मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मैं अजायबघर में लाया गया विलुप्त होती प्रजाति का कोई जीव हूँ। वह कर्कश आवाज़ में बोला-किस दुनिया में रहते हो जी। इतना बरेली में



झुमका नहीं गिरा होगा, जितना झमाझम रुपया गिरा है। दस रुपये में झालमुड़ी सपने में खा सकते हो महाशय, हकीकत में कभी नहीं। हमारे यहाँ शुरुआत ही 50 रुपये से होती है।

कई प्रकार की झालमुड़ी देखकर ललचा रही अपनी सारी इद्रियों को समेट कर मैं विनीत भाव से बोला-बड़े-बड़े लोग तो दस-दस रुपये में खा रहे हैं। आप सोशल मीडिया में देखते नहीं क्या?

मुझे न रील देखने का शौक है, न रील बनवाने की आदतें दिमाग में डाउनलोड करके रखी हैं। हाथों के दांत देखें हैं न... अब किनारे हटो फालतू में न जाने कहाँ-कहाँ से भेजा फ्राई करने लोग चले आते हैं।

मैंने भारी मन से सिक्का वापिस जेब में डाला। अपनी ललचाई जीभ को समझाते हुए कहा-तू इतनी महंगी झालमुड़ी खा कर क्या करेगी। चल किसी चुनवी पाटी के कार्यालय में, वहाँ एक से बढ़कर एक आइटम खाने को मुफ्त में मिलेंगे, तब मेरी जुबान न संतोष कर लिया। मैं बुझे दिल से दुकान के आगे बढ़ रहा था, पर मेरा मन अब चुनवी दावतों की ओर बेतहाशा भागा जा रहा था।

स्वामी, सुबह सवरे मीडिया एल.एन.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जेन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subhassaverenews@gmail.com

'सुबह सवरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

व्यक्तित्व

विजय जोशी

पूर्व गुप्त महाप्रबंधक, भेल

जो भी पुरुष निःस्पृह, निष्फलक, निडर है उसे प्रणाम। कलियुग में वही हमारा ईश्वर है। भाषा केवल संप्रेषण का ही माध्यम ही नहीं, अपितु सभ्यता, संस्कृति एवं विरासत की वाहिनी है, बशर्ते इस बात के मर्म, धर्म को आत्मसात करते हुए हम इसे निजी जीवन में भी सार्थक कर सकें। बकलम भारतेन्दु हरिश्चंद्र - निज भाषा उन्नति अहै निज उन्नति को मूल। यह हुई पहली बात। दूसरी यह कि आजादी तुरंत पश्चात के स्वार्थ समाहित राजनैतिक नेतृत्व ने इस पहलू का तिरस्कार कर मैकाले का शिथिलत्व स्वीकारते हुए हिंदी हित को ताक पर रख दिया। इस सबके बावजूद भी यदि हिंदी उभर कर निखर सकी तो इसका श्रेय इस बात को जाता है कि यह कभी राज्याश्रित नहीं रही। भक्तिकाल के कवियों और संतों के माध्यम से यह जन जन की शिराओं में समाहित हो गई। स्वाधीनता उपरांत यह दायित्व निभाया तत्कालीन रचनाधर्मी संस्कारित पीढ़ी ने जिनकी समर्पित सेवा के परिप्रेक्ष्य में ही हिंदी प्रतिष्ठित हो सकी।

इस संदर्भ में जो प्रमुख नाम उभरते हैं उनमें शीर्ष पर हैं कैलाशचंद्र पंत। एक निर्मल, निःस्पृह मुखार्कृति। सहज, सरल, सादगीयुक्त। कहीं कोई छल या रहस्य नहीं। अतृप्त व्यक्तित्व। व्यक्तिगत

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अनर्थक के प्रबन्ध संचालक हैं।

फिल्म का जेनर चाहे जो हो सनी देओल का फिल्म के नाम से जुड़ा सदीदा जेडिण्डर (विशेषण) है - प्रेम कथा । विभाजन की त्रासदी पर जब गदर बनी तो फिल्म का नाम लिखा गया गदर - एक प्रेमकथा , भारत- पाकिस्तान की पृष्ठभूमि में एक जासूसी फिल्म बनी - द हीरो उसके साथ भी जोड़ा गया - ए लव स्टोरी ऑफ स्याँय । इसी तर्ज पर इस माह दस तारीख को प्रदर्शित फिल्म - डकैत को लिखा गया - डकैत = एक प्रेमकथा । जातिवाद का उलझाव , जेल से फरारी , पुराना प्यार, एक करोड़ की डकैती और ढेर सारे जोड़- तोड़ इस सबको समेट कर जो जमावट - डकैत -एक प्रेमकथा में की गई है वो ऊपरी तौर पर जितनी मनभावन लगती है उतनी ही उलझाव से भरी भी है । फिल्म के निर्माता की नीयत तो अच्छी है, लेकिन उसे फिल्माने में एकाधिक चूक ने सब कुछ गड़बड़ा दिया । फिल्म की शुरुआत आपको बाँधती है, लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उस पर पकड़ ढीली पड़ती जाती है और दर्शक सोचने लगता है कि आखिर फिल्म का मतलब क्या है ?

महत्वाकांक्षा या स्वार्थ से सर्वथा परे। वही जिसकी कल्पना स्वयं राम ने की = निर्मल मन जन सो मोहि पावा मोहि कपट छल छिद्र न भावा



मैं साठ के दशक में शासन प्रशासन द्वारा हिंदी की उपेक्षा का चरमदीय गवाह रहा हूँ। एक छोटे से भवन में स्थापित तत्कालीन हिंदी भवन प्रमुख नेत्र सुख वचितन बैजनाथ दुबेजी की व्यथा का

प्रत्यक्षदर्शी। तब हिंदी दिवस भी मनाया जाता था भेल सभागार में।

और फिर पदार्पण हुआ एक सेवाभावी समर्पित युवा शिष्यवत श्री कैलाशचंद्र पंत का, जिन्होंने

बहैसियत मंत्री संचालक, म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिंदी भवन से जुड़ते हुए हिंदी के पौधे को अपने निष्काम कर्मी प्रयत्नों से सींचते हुए न केवल पुष्पित पश्वित्य किया अपितु संपूर्ण समाज को

वटवृक्ष की शीतल छाँह प्रदान करते हुए साहित्यकारों को प्रतिभा निखार मंच की सुविधा।

एक कहावत है कि रोम वाज़ नॉट बिल्ट इन ए डे अर्थात रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। हिंदी भवन के वर्तमान स्वरूप के संदर्भ में यह स्वयंसिद्ध है, जिसकी सुदृढ़ नींव में समाहित है दादा पंत का स्वैद उर्फ़ खून पसीना।

तुनिया में वही शिखर है तारीफ़ के काबिल जिम शखूस ने हालात का मुख मोड़ दिया हो जहाँ तक वर्षों से निरंतर प्रवाहमान प्रतिष्ठित आयोजनों की बात है तो उसकी एक लंबी फेहरेस्त है पावस व्याख्यानमाला, समाजसेवी एवं हिंदीतर भाषी हिंदी सेवा सम्मान, वरिष्ठ विमर्श, होली, दिवाली उत्सव सहित मासिक साहित्यिक पत्रिका अक्षरा आदि।

हाल ही में आपने आयु के 90 वर्ष पूर्ण होने पर अपना दायित्व अनासक्त भाव से अगली पीढ़ी के युवा व्यक्तित्व को सौंपा है, जो इस दौर की कुर्सी प्रेमी जमात के लिये बहुत बड़ा संदेश है। पद्मश्री जैसे अनेकानेक पुरस्कारों से आपका सम्मानित किया गया है। इन सदप्रयासों से सम्मान की महिमा में भी श्रीवृद्धि ही हुई है।

दादा पंतजी का चार दशक से भी अधिक का मेरे प्रति अग्रज समान स्नेह मेरी अनमोल निधि है। आपका साथ गहन पीड़ा के क्षणों में पूरी शिद्दत एवं श्रद्धा के साथ की गई प्रार्थना के समान रहा है, जो इन पलों में भी मैं मन ही मन दोहरा रहा हूँ। कुल मिलाकर आपके संदर्भ में बतर्ज रामचरित मानस- काम क्रोध मद मान न मोहा लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा जिन्ह के कपट दंभ नहीं माया तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया

बार-बार दिशा बदलने से दुर्दशा को प्राप्त हुई 'डकैत'

फिल्म की कहानी हरिदास (अदिवी शेष) की है, जो तेरह साल जेल में बिताने के बाद बाहर निकलने वाला है। उसके दिमाग में बस एक ही विचार है कि जैसे भी हो पैसे जुटाऊँ और विदेश में बस जाऊँ । लेकिन, उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा और अधूरा अध्याय जूलियट (मृणाल ठाकुर) का भी तो है जिसे वह अपने जेल जाने की वजह मानता है। जब दोनों वर्षों बाद आमने-सामने आते हैं, तो मामला सिर्फ प्यार का नहीं रहता। यद्यत्त, गुस्सा और मजबूरी तीनों साथ खड़े नजर आते हैं। कहानी में कई मोके आते हैं जहाँ यह बहुत सलीके की फिल्म बन सकती थी, लेकिन फिल्म बार-बार दिशा बदलती है और इससे उसकाअसर कमजोर हो जाता है।

फिल्म की कहानी हरिदास (अदिवी शेष) की है, जो तेरह साल जेल में बिताने के बाद बाहर निकलने वाला है। उसके दिमाग में बस एक ही विचार है कि जैसे भी हो पैसे जुटाऊँ और विदेश में बस जाऊँ । लेकिन, उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा और अधूरा अध्याय जूलियट (मृणाल ठाकुर) का भी तो है जिसे वह अपने जेल जाने की वजह मानता है। जब दोनों वर्षों बाद आमने-सामने आते हैं, तो मामला सिर्फ प्यार का नहीं रहता। यद्यत्त, गुस्सा और मजबूरी तीनों साथ खड़े नजर आते हैं। कहानी में लॉकडाउन का बैकड्रॉप भी है, जहाँ अस्पतालों में अफरा-तफरी का माहौल है।

इसी दौरान हरिदास को पता चलता है कि एक अस्पताल के अन्दर भारी मात्रा में काला पैसा घूम रहा है, जिसे अस्पताल का



मालिक (प्रकाश राज) सम्भाल रहा है। इधर जूलियट अपने किसी करीबी के इलाज के लिए एक करोड़ रुपये जुटाने में

लगी है और हरिदास इस मौके को एक प्लान में बदल देता है। कहानी में कई मौके आते हैं जहाँ यह बहुत सलीके की फिल्म बन सकती थी, लेकिन फिल्म बार-बार दिशा बदलती है और इससे उसकाअसर कमजोर हो जाता है।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है जूलियट की भूमिका में मृणाल ठाकुर इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत हैं। उनका चरित्र सिर्फ रोने या मजबूरी दिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उस चरित्र चित्रण में एक मजबूती है। जूलियट ही चरम पर इस फिल्म को सम्भाल लेती है। अदिवी शेष की भूमिका भी प्रभावशाली है। उन्होंने एंग्री मेन वाला अंदाज अच्छे से निभाया है।

लेकिन बीच में उनके अभिनय के झोल खान जाने से उनका दर्शकों से जुड़ाव टूट जाता है। अनुराग कश्यप स्क्रीन पर आते ही ध्यान खींचते हैं। भले ही भूमिका छोटी हो। अहुल कुलकर्णी अपने अनुभव से चरित्र में वजन लाते हैं। प्रकाश राज एक भ्रष्ट अस्पताल मालिक की भूमिका में दिखते हैं, लेकिन उनका ट्रैक और ज्यादा मजबूत हो सकता था।

निर्देशक शनील देव अपनी सोच को परदे पर उतारने में बड़े ऊहापोह में नजर आये। फिल्म कभी एक्शन थ्रिलर लगती है, कभी इमोशनल ड्रामा और कभी लव स्टोरी, लेकिन इनमें से कोई भी ट्रैक पूरी मजबूती से नहीं उभर पाता है। इस वजह से फिल्म की पहचान साफ नहीं बनती। पटकथा ने फिल्म को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। पहला हाफ धीमा है और कई सीन बिना असर के गुजर जाते हैं। दूसरे हाफ में खासकर आखिरी तीस मिनट में फिल्म थोड़ी पकड़ बनाती है और यहाँ कुछ सीन सच में अच्छे लगते हैं। लेकिन पूरी फिल्म को संभालने के लिए यह काफी नहीं है। फिल्म का बैकग्राउंड म्यूजिक काफी अच्छे है और कई दृश्यों को बेहतर बना देता है। सिनेमैटोग्राफी फिल्म को एक अच्छा सहारा देती है। गाने ठीक हैं, लेकिन थिएटर से बाहर निकलते ही याद नहीं रहते।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

पहले भारत गांवों में बसता था, भारत को देखने समझने के लिए गांवों को नजदीक से देखने समझने की आवश्यकता होती थी। भारतीय लोग हमेशा से शांति पसंद लोग थे। अपने खुशियों में खुश तथा दूसरों के दु:खों में साथ खड़े होने वाले लोग थे। भारतीय कभी किसी का अनभल नहीं चाहते थे पर दुर्भाग्य ही कह सकते हैं कि हमारे शान्तिप्रियता को बाहरी लोगों द्वारा कमजोरी समझा गया और हमेशा कोई न कोई भारतीय भूमि पर गिड़कों की भांति नजर गड़ाते हुए आ ही जाते थे। मुगलों के बाद अंग्रेजी सत्ता भी ऐसे ही आई थी। लोगों की ज़रूरतें सीमित थी। खाना, पीना मस्त रहना और जो तोड़-महनत करना हर भारतीयों का यही फंड था। सभी की ज़रूरतें गांवों में ही पूरी हो जाती थी फलतः शहर पनपना तो चाहता था पर गांवों के खुशहाल जीवन के बदौलत पनप नहीं पाता था। लोग अपने पारंपरिक कार्यों को ही आगे बढ़ाते हुए खुश थे। कम से कम गुलामी से तो मुक्त थे। छोटों और बड़ों को मान-सम्मान मिलता था। मनुष्यता सभी के जेहन में थी ।खेती-बाड़ी और पशुपालन का अच्‍छ सामंजस्य रहता था पर बाहरी आक्रमणकारियों से भारत हमेशा ही परेशान रहा। डॉर्नलैंड के जेम्स मिल, जो अर्थशास्त्री और राजनीतिक दर्शनिक थे, को लागत था कि पूरे एशिया का सामाजिक ताना-बाना सभ्यता के मामले में यूरोप से बहुत पीछे है। मिल के नजर में पूरे भारत पर ब्रिटिश शासन इस लिए जरूरी था ताकि भारत सभ्यता के राह पर आगे बढ़ सके। लोग अपने को श्रेष्ठ समझने के दंभ से बाहर कब आयेगे? तब भी नहीं आए थे। सीमित सोच को वैश्विक स्तर पर विस्तारित करने के पीछे की मानसिकता आज से नहीं अपितु हमेशा से ही रही है। दूसरा उदाहरण जेम्स रनेल का है जिनका काम ब्रिटिश शासन में भारत का मानचित्र तैयार करना था, जिसके मानचित्र के आवरण पर बने एक कृति में विद्वान ब्राह्मणों द्वारा ब्रिटेनिया जो ब्रिटिश सत्ता की द्योतक थी, को हिंदुओं की पवित्र पुस्तकें भेंट दी जा रही है और जिसके

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

भा रत में प्रेस को सदैव लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की संज्ञा दी जाती रही है क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती में इसकी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यही कारण है कि स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रेस की स्वतंत्रता को बहुत अहम माना गया है लेकिन विडम्बना है कि विगत कुछ वर्षों से यहां भी प्रेस स्वतंत्रता के मामले में लगातार कमी देखी जा रही है। इसीलिए प्रतिवर्ष 3 मई को ‘विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस’ मनाया जाता है। कलम को तलवार से भी ज्यादा ताकतवर और तलवार की धार से भी ज्यादा प्रभावी इसीलिए माना गया है क्योंकि इसी की सजगता के कारण न केवल भारत में बल्कि अनेक देशों में पिछले कुछ दशकों के भीतर बड़े-बड़े घोटालों का पर्दाफाश हो सका, जिसके चलते बड़े-बड़े उद्योगपतियों, नेताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों को एक ही झटके में अर्थ से फर्श पर आना पड़ा। यही कारण हैं कि समय-समय पर कलम रूपी इस हथियार को भोथरा बनाने या तोड़ने के कुचक्र होते रहे हैं और विभिन्न अवसरों पर न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में सच की कीमत कुछ पत्रकारों को अपनी जान देकर भी चुकानी पड़ती है। पिछले दशकों में प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में स्थितियां काफी बदल गई हैं। आज दुनियाभर में पत्रकारों पर राजनीतिक, अपराधिक और आतंकी समूहों का सर्वाधिक खतरा है और भारत भी इस मामले में अछूता नहीं है। विडम्बना है कि दुनियाभर के न्यूज रूम्स में सरकारी तथा निजी समूहों के कारण भय और तनाव में वृद्धि हुई है। पेरिस स्थित ‘रिपोर्टर्स सैसस फ्रंटियर्स’

बंगाल और राजनीति

नीतीश मिश्र

लेखक पत्रकार हैं

भा रतीय राजनीति पिछले एक दशक से लोकतंत्र की अनीम नैतिकता की गभनाल से छत -विक्षत होकर अभी की तरह अपने मरणसन् अवस्था में आकर फिरसे पुनर्जन्म लेने के लिए अमादा होने का कोई अवसर दुखाना नहीं चाहती हैं! लेकिन यह भारतीय राजनीति का दुर्भाग्य कहिये की इसे महात्मा गाँधी या जयप्रकाश नारायण जैसा कोई व्यक्तिव नहीं मिल पा रहा हैं जो कि सात रश्क से राजनीति पर जमी हुई काई को साफ करके दिल्ली में राजनीति का शंखनाद कर सके । बाजार में आवारा पूंजी के बढ़ते हस्तक्षेप के चलते आज राजनीति की हालत उस गरीब की लुगारी जैसी हो गयी है कि जब जिसका मन करं उसे वह उस दिशा में हँकने में कामयाब हो जा रहा हैं । जिसकी क्रोमत दिल्ली को छोड़कर समूचे हिंदुस्तान को इन दिनों चुकानी पड़ रही हैं । राजनीति के फलस्फ को लेकर दिल्ली का अपना कोई मौलिक मनोविज्ञान नहीं है ्य देश के विभिन्न हिस्सों से राजनीति का रसायन लेकर अपने तानाशाही का स्केच बनाकर हिन्दुस्तान की मौलिक सभ्यता पर केवल अपने अपने दम्भ को हंसी बिखेरी है । यह हंसी दिल्ली की कोई आज की इजाद की हुई हंसी नहीं है बल्कि पांच हज़ार साल पुरानी हंसी हैं । इस हंसी का कथानक दिल्ली तब लिख रही थी, जब हरितनगपुर की सभा में द्रोपती का भरी सभा में चीरहरण हो रहा था, और सभा में बैठे सभी महारथी उस चीरहरण की घटना को बहुत ही आसानी से रोक सकते थे ्य लेकिन भरी सभा में कोई भी महारथी अपने स्थान से उठना उचित नहीं समझा । उसी समय दिल्ली अपने निर्यात का इतिहास लिख चुकी थी । निर्यात के आगे दिल्ली कभी अपना एक कदम आगे नहीं बढ़ाएगी।

पिछले दिनों पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव में देश का सबसे ज्यादा ध्यान बंगाल में हुए विधानसभा चुनाव को लेकर हैं । बंगाल के चुनाव को लेकर बीजेपी जिस तरह से मैदान में मैराथन चक्रव्यूह को रचने में महारथ हासिल की उससे साफ प्रतीत होता हैं कि यह चुनावी चक्रव्यूह कोई सामान्य चक्रव्यूह न होकर महाभारत के उस चक्रव्यूह की

भारत में कला विद्यालय और समय से द्रढ़

बारे में जिक्र है कि भारतीय लोग स्वेच्छ से प्राचीन पवित्र ग्रंथ ब्रिटेनिया को सौंप कर उनसे यहाँ आने का आग्रह कर रहे हैं ताकि हमारे संस्कृति और पवित्र ग्रंथों की रक्षा की जा सके। खुद को महान दर्शाने हेतु कहां तक गिरा जा सकता है, यहाँ आसानी से देखा जा सकता था। ऐसे ही समीक्षक और इतिहासकार को पढ़कर हम भारतीय भी गर्व की अनुभूति करते हैं। दैर बीता और नील की खेती सहित और भी व्यापारिक खेती जिसे भारत से बाहर भेजा जाता था, जिसमें भारतीयों का खून पसीना बहता था का विरोध भी शुरू हुआ, खेती ना करने का प्रण भी लिया जाने लगा जबकि उधर से आये दिन नये कानून बन रहे होते थे जिसमें धर्म परिवर्तन कर इसाई बनने वालों को तमाम रियायतें बख्शी जा रही थी, अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु तमाम प्रयोग किए जा रहे थे। भारतीय संस्कृति और संस्कारों पर भी लगातार प्रहार किए जा रहे थे। कुछ महीनों और वर्षों के अध्ययन के बाद संस्कृत के ग्रन्थों को यूरोपीय ग्रन्थों से हीन बताया जाने लगा था। भारतीय रचनात्मकता को हीनता की दृष्टि से देखा जाने लगा था। भारतीय रचनाकारों को अंधविश्वासों से भरा माना जाने लगा था। ऐसे समय में शिक्षा के साथ ही कला पर भी यूरोपीय प्रभाव लाने हेतु कार्य किया जाने लगा था जबकि भारतीय कलाकारों में कुछ को छोड़कर अधिकतर ने इन सभी के दवाब में आकर पहले ही अपने क्षेत्र बदल लिए थे।

ब्रिटीश शासकों को ये यकीन हो गया था कि भारतीय लोग शांत स्वभाव के साथ ही हुनरमंद भी हैं यदि इन्हें प्रशिक्षित कर दिया जाए तो ये बहुत कुछ नया कर सकते हैं और इनके हुनर को यूरोप के बाजार में आसानी से भुनाया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स लंदन के सिद्धांतों पर भारत में कुछ कला विद्यालय खोले गए जिनमें मद्रास का नाम सर्वोपरि है। मद्रास, कलकत्ता, बंबई, लाहौर कला विद्यालय के बाद और भी विद्यालय खुले जिनका जिक्र क्रमशः होगा। कला विद्यालयों के खोलने का मुख्य प्रयोजन उस समय था, मुर्तियों के साथ ही ड्राइंग, अल्ट्रान्त मूदमांड, काष्ठ कला, धातुओं की कला आदि पर भी कार्य करना था। मद्रास कला विद्यालय के पीछे सारा श्रेय अलेक्जेंडर हेंटर को जाता है जिन्होंने

वीथिका

चिकित्सा के साथ ही कला में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया था। 1 मई 1850 को एक निजी संस्थान के रूप में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना हेंटर ने ही की थी। मद्रास कला विद्यालय में कला में रूचि रखने वाले बच्चों को दाखिला दिया जाता था जहाँ



कला, शिल्प के साथ ही दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं को और भी परिष्कृत कर सौंदर्यबोध के साथ प्रदर्शित करना सिखाया जाता था। मिट्टी के बर्तनों में भी कई प्रकार के प्रयोग किए जाते रहे थे। अपने हुनर को और भी परिष्कृत रूप से प्रस्तुत करने का बड़िया माध्यम बन गया था मद्रास कला विद्यालय। शुरुआत में पारंपरिक कलाकारों और उनके धातु, फर्नीचर आदि के कार्य भी होते रहे थे। हेंटर अपने वेतन और बेची गई पेंटिंग्स के माध्यम से हर महीने विद्यालय को सहयोग भी करते रहे थे। 1851 में उपयोगी कला का विभाग भी स्थापित हो गया। 1852

में ये विद्यालय सरकार के अधीन हो गया और इसका नाम बदलकर गवर्नमेंट स्कूल ऑफ इंस्ट्रियल आर्ट्स कर दिया गया फिलहाल उस विद्यालय को गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स के नाम से जाना जाता है। 1884 से लगभग एक दशक तक ई.वी. हैवेल यहाँ के अधीक्षक पद पर कार्य किए जो आगे चलकर कलकत्ता विद्यालय चले गये और अवनीन्द्रनाथ टैगोर के साथ मिलकर कला के बड़े क्रांतिकारी कदम उठाने में अहम भूमिका निभाई। (संलन कृति अवनीन्द्रनाथ टैगोर की भारत माता है) देवी प्रसाद रॉय चौधरी 1928 में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट के उप प्राचार्य बनाए गए उन्हें 1929 में भारतीय मूल का पहला प्राचार्य बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। कला विद्यालयों में अधिकांश शौकिया और उच्च वर्ग से थे जिन्हें भारतीय कला के बारे में कुछ खास जानकारी नहीं थी और जो अपने शिक्षकों की भांति ही विदेशी पद्धति पर कार्य करना चाहते थे। अधिकतर छत्र विदेशी पद्धति को खुद में आत्मसात कर लिए थे जिनको जगने में काफी समय लग गया या कह सकते हैं कि अवनीन्द्रनाथ और हैवेल के क्रांतिकारी कदम के बाद की जागरूकता ने ही इन सभी को भी प्रभावित किया।

मद्रास के बाद और भी कला विद्यालय खोले गए जिनमें अगला नंबर कलकत्ता कला विद्यालय का था। कलकत्ता कला विद्यालय भी शुरू में निजी विद्यालय के रूप में ही रहा जिसकी स्थापना 16 अगस्त 1854 को गरनाहाटा चितपुर में हुआ था। तीन महीने बाद विद्यालय को मुट्टी लाल सील के इमारत में स्थानांतरित कर दिया गया। 1859 में गैरिक कला विद्यालय से प्रधानाध्यक के रूप में जुड़े। करीब पांच वर्ष बाद ये विद्यालय सरकार के अधीन हो गया जिसके बाद 29 जून 1864 को हेनरी होवर लोके को यहाँ का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। लोके यहाँ के शिक्षा व्यवस्था और पाठ्यक्रम पर लगातार काम करते रहे पर दुर्भाग्य कहा जा सकता है कि विदेशी असर से बाहर का मामला नहीं बन पा रहा था। विद्यालय की जगह भी बदलती रही। बाद में सहायक प्रधानाध्यक का पद भी सृजित हुआ और 1848 में जर्मे कलाकार ओल्रिंटो. गिलहार्डी को जनवरी 1886 में नियुक्त किया गया। जुलाई 1896 में प्रधानाचार्य के

रूप में अनेस्ट विनफिल्ड हैवेल की नियुक्ति हुई। हैवेल भारतीय कला के प्रति पहले से ही सम्मान की दृष्टि रखते थे। मद्रास के अनुसंधान करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। भारतीय कला की थाती इतनी विशद है कि थाह पाना मुश्किल है फिर क्यों न हम अपने पर ही ध्यान दें। हालांकि उन पर भारतीय छत्रों और कला पारखियों द्वारा अपनी शैली को न सिखाने का भी आरोप लगा पर इन सभी से अलग वो अपने काम में लगे रहे और भारतीय कला के विकास पर लगातार जोर देते रहे। हैवेल ने गैलरी में लगे चित्रों को बदलकर भारतीयता का जामा पहना दिया और भारतीय छत्रों में भारतीय कला थाती को लेकर आत्मविश्वास बढ़ाते रहे फलतः आगे सहित और भी भारतीय कला की अनुकृति पर काम होने लगा। ‘भारतीय चित्र वीथि’ स्थापित करने का श्रेय भी उन्हीं को है। जागरूकता फैलाने हेतु उन्होंने भारतीय कला के आदर्श, भारतीय कला में हिमालय सहित कई महत्वपूर्ण किताबें और कला विद्यालय में बहुत समय तक उप-प्रधानाचार्य के पद पर रहे। पर्शी ब्राउन जिनके कला की शिक्षा रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स से हुई और जो इसके पहले लाहौर के मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्रिंसिपल भी रह चुके थे अब कलकत्ता विद्यालय के प्रिंसिपल बने। ब्राउन की पहचान कला इतिहासकार के रूप में भी रही है। अवनीन्द्रनाथ के शिष्यों की पूरी एक फेहरेस्त तैयार हो गई जो आने वाले समय में भारतीय कला को बहुत प्रभावित करने वाले थे। प्रिंट मैकिंग के अध्ययन हेतु विदेश जाने वाले पहले भारतीय कलाकार मुकुल चंद डे को 1928 में कलकत्ता कला विद्यालय के पहले भारतीय स्थाई प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त होने का भी श्रेय प्राप्त है।

जिम्मेदारी भी है पत्रकारिता की स्वतंत्रता

(आरएसएफ) अथवा ‘रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स’ नामक संस्था द्वारा हर साल अपनी वार्षिक रिपोर्ट में प्रेस की स्वतंत्रता को लेकर जो तथ्य प्रस्तुत किए जाते रहे हैं, वे सदैव चौंकाने वाले होते हैं। हालांकि यह अलग बात है कि कुछ देश इस रिपोर्ट में जारी किए जाने वाले आंकड़ों को पूर्वाग्रह से प्रेरित बताकर खारिज भी करते रहे हैं। ‘रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स’ एक ऐसा गैर-लाभकारी संगठन है, जो विश्वभर के पत्रकारों पर हमलों का दस्तावेजीकरण करने और मुकाबला करने के लिए कार्यरत है और प्रतिवर्ष ‘वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स’ अर्थात ‘विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक’ नामक रिपोर्ट पेश करता है। ‘विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2019’ में उसने भारत सहित विभिन्न देशों में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति की विवेचना करते हुए स्पष्ट किया था कि किस प्रकार विश्वभर में पत्रकारों के खिलाफ घृणा हिंसा में बदल गई है, जिससे दुनियाभर में पत्रकारों में डर बढ़ा है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2026 के अनुसार, 180 देशों की सूची में भारत 157वें स्थान पर खिसक गया है जबकि 2025 में भारत 151वें स्थान पर था यानी एक वर्ष में छह स्थानों की गिरावट दर्ज की गई है। इससे पूर्व 2024 में भारत 159वें, 2023 में 161वें और 2022 में 150वें पायदान पर

खड़ा था। यह रिपोर्ट प्रेस स्वतंत्रता के लिए भारत की रैंकिंग में लगातार गिरावट का संकेत देती है। रिपोर्ट के मुताबिक पत्रकारों के साथ व्यवहार के लिए ‘संतोषजनक’ माने जाने वाले देशों की संख्या बढ़ रही है लेकिन ऐसी संख्या भी कम नहीं है, जहाँ स्थिति ‘बहुत गंभीर’ है। रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स द्वारा जारी दुनियाभर के



देशों की प्रेस फ्रीडम रैंकिंग में भारत जहाँ 2024 में 2023 के मुकाबले दो पायदान ऊपर चढ़ा, वहीं 2023 में 2022 के मुकाबले 11 पायदान नीचे गिरा था और 2022 में भी 2021 की रैंकिंग के मुकाबले 8 स्थान नीचे फिसला था। 2021 की रैंकिंग में भारत का स्थान 142वां था। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2026 की सूची में नॉर्वे शीर्ष पर है।

भारत के लोकतंत्र को तो दुनिया का सबसे सफल और बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है, वहीं अगर नावें जैसा छोटा सा देश प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में लगातार शीर्ष स्थान पर विराजमान है और चीन को छोड़कर भारत के लगभग सभी पड़ोसी देश भी बेहतर स्थिति में है तो यह स्थिति भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश के लिए सही स्थिति नहीं है। ऐसे में हमें गंभीरता से मंथन करने की जरूरत है कि हम इस मामले में वर्ष दर वर्ष क्यों फिसल रहे हैं? प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में यह गिरावट स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत नहीं है।

प्रेस की स्वतंत्रता में कमी आने का सीधा और स्पष्ट संकेत यही है कि लोकतंत्र की मूल भावना में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो अधिकार निहित है, उसमें धीरे-धीरे कमी आ रही है। समाज में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान रहा है, इसीलिए

इसे लोकतंत्र का चौथा मजबूत स्तंभ माना गया है लेकिन पिछले कुछ वर्षों से जिस प्रकार खासकर इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा बगैर किसी खानकारी को जाने-परछे केवल अपनी टीआरपी बढ़ाने के लिए झूठ का बवंडर तैयार किया जाता है, उसे देखकर कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है मानो टीवी चैनल पर समाचार या कोई न्यूज कार्यक्रम नहीं बल्कि कोई मसालेदार

राजनीतिक फिल्म चल रही हो। इसका सबसे बड़ा नुकसान यही हो रहा है कि लोगों का विश्वास मीडिया पर निरंतर कम हो रहा है और लोगों का आकर्षण सोशल मीडिया की ओर बढ़ रहा है, जहां पहले से ही फेक न्यूज बहुत बड़ी समस्या मौजूद है तथा एआई इस समस्या को और ज्यादा बढ़ाने में बड़ा योगदान दे रही है। भारतीय संविधान में प्रेस को अलग से स्वतंत्रता प्रदान नहीं की गई है बल्कि उसकी स्वतंत्रता भी नागरिकों की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता में ही निहित है और देश की एकता तथा अखण्डता खतरें में पड़ने की स्थिति में इस स्वतंत्रता को बाधित भी किया जा सकता है किन्तु ऐसी कोई स्थिति निर्मित नहीं होने पर भी देश में पत्रकारिता का चुनौतीपूर्ण बनते जाना लोकतंत्र के हित में कदापि नहीं है बल्कि यह स्पष्ट रूप से कुछ शक्तियों द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था के चौथे स्तंभ को ध्वस्त करने का ही प्रयास माना जाता है। कल्पना की जा सकती है कि प्रेस की स्वतंत्रता अगर इसी प्रकार सवालों के घेरे में रही तो पत्रकार कैसे पारदर्शिता के साथ अपने कार्य को अंजाम देते रहेंगे? प्रेस की स्वतंत्रता को बाधित करने के प्रयासों के चलते कैसे सच को उजागर कर उसे निष्पक्ष तरीके से जनता तक पहुंचाया जाना संभव होगा? देश में प्रेस की स्वतंत्रता बरकरार रहे, इसके लिए किसी मीडिया संस्थान से जुड़े पत्रकार हों या स्वतंत्र पत्रकार, उनकी सुरक्षा को लेकर कड़े कानून बनाए जाने की सख्त दरकार है ताकि बगैर किसी दबाव या भय के पत्रकार अपना अधिकृत बखूबी निभाते रहें। हालांकि यह भी बेहद जरूरी है कि लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ ‘प्रेस’ को भी अपनी सीमाओं और मर्यादाओं का ध्यान रखते हुए अपनी स्वतंत्रता का सही इस्तेमाल करना चाहिए।

उमा कहड़ मैं अनुभव अपना

का शास्त्रों में स्पष्ट तौर पर उल्लेख मिलता हैं ्य एक राजा में पहला गुण सामने वाले से या पड़ोसी से संधि करने का गुण होना चाहिए । दूसरा विग्रह, यान,आसन, पांचवा गुण शत्रु के सामने अपनी पूरी ताकत एक बार में कभी प्रगट नहीं करना चाहिए और छठवा गुण समाश्रय का होना चाहिए । तृणमूल कांग्रेस की सुप्रिमंत्री ममता बनर्जी भले ही एक दशक से बंगाल की कमान संभालने में सफल रही हों लेकिन उममे अभी इन छः गुणों का सख्त अभाव है । यही वजह है कि वह इस चुनाव में विपक्ष को जोड़ने में पूरी तरह से कामयाब नहीं हो पायी । यही कारण है कि 2021के विधानसभा चुनाव में ममता धायल होकर भी आत्मविश्वास से पूरी तरह लबरेज थी ्य लेकिन इस चुनाव में उनके चेहरे पर पहले जैसा आत्मविश्वास पूरे चुनाव के दौरान देखने को नहीं मिला ्य उम्र के पड़ाव के चलते उनका आत्मविश्वास थका हुआ हो,लेकिन उनके इस आत्मविश्वास की कमी की भरपायी सयानी घोष करने में पूरी तरह से कामयाब रही। सयानी घोष बांग्ला फिल्मों में नायिका की भूमिका निभा चुकी है। उन्हें इस बात का अच्छे से इल्म है कि चुनावी सभा में पब्लिक का ध्यान अपनी तरफ कैसे आकर्षित किया जाता है? उनकी कला का लाभ इस बार बड़े पैमाने पर तृणमूल कांग्रेस को मिलने जा रहा है इसमें रती भर भी संदेह नहीं है ।

भाजपा द्वारा ‘कांग्रेस मुक्त का नारा ’ का नारा बीजेपी के दीवालियेपन का केवल नमूना मात्र हैं क्योंकि कांग्रेस की अपनी समस्तता की अपनी मौलिक विचारधारा है। कांग्रेस पार्टी कोई एक दिन में निर्मित नहीं हुई ्य एक लम्बे संघर्ष और आंदोलन से उपजी पार्टी हैइय वह अलग बात है कि इन दिनों कांग्रेस के पास मास लीडर्स की कमी है जिसका खामियाजा पार्टी को उठाना पड़ रहा है , लेकिन इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कांग्रेस अपनी चेतना के साथ एक बार फिरसे अपनी जड़ों की और लौटना शुरू कर दी है । बीजेपी हिंदुत्व का अजपा जाप करके भले ही सत्ता हथियाने में सफल हो जा रही हो लेकिन बीजेपी के पास अपना कोई आर्थिक मॉडल ऐसा नहीं है जिससे वह समावेशी विकास की आशाशिला रख सकें । बीजेपी, कांग्रेस के ही आर्थिक मॉडल पर काम करके विकास का हाथी दौंत दिखाने में मशगुल है । बीजेपी की नीतियों की शिकार कांग्रेस के

लोट्स अभियान के जरिये तृणमूल कांग्रेस की सरकार को अस्थिर भी कर सकती है । इसका उदाहरण बीजेपी बहुत पहले ही मध्यप्रदेश में पेश कर चुकी है ।

बंगाल में ममता की सरकार बने या बीजेपी की लेकिन राष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य में अरविन्द केजरीवाल और ममता बनर्जी की एक बार पुनः वापसी होने से कोई नहीं रोक सकता , क्योंकि दोनों नेताओं की राजनीति कांग्रेस और बीजेपी के विरोध से ही शुरू हुई है ्य ममता जहाँ सिंगूर परियोजना का विरोध करके अपने व्यक्तिव का लोहा मनवाने में सफल रही वहीं अरविन्द केजरीवाल अना आंदोलन के जरिये अपनी राजनीति चमकाने में सफल साबित हुए । अगर ममता बनर्जी बंगाल में सरकार बनाने में सफल होती है तब एन जी अरविन्द केजरीवाल ममता के कंधे पर सवार होकर राष्ट्रीय राजनीति के फलक पर कोई नया फार्मुला इजाद करते हुए नजर आएंगेइय ममता और केजरीवाल की ग्राउंड फील्डिंग बहुत तगड़ी हैं । अपन आगर क्रिकेट मैच की बात करे तो मैच वहीं टीम जीतती है जो सबसे ज्यादा कैच पकड़ती है या जिस टीम की फील्डिंग बेहतरहन होती है ।भाजपा इन दिनों जिस तरह से चुनावी पिच पर बैटिंग कर रही है उससे साफ तौर पर प्रतीत होता है कि एक गलत शाट्स अगर भाजपा खेलती है तो अरविन्द और ममता कैच पकड़ने में कोई देरी नहीं करेंगे । खैर राजनीति में कुछ भी सम्भव है, लेकिन ममता और अरविन्द के संघर्ष को देखकर यह कहना मौजू लाता है कि भले ही बीजेपी दोनों को पराजित कर दे लेकिन दोनों खुद को कभी लज्जित महसूस नहीं होने देंगे ।रही बात सपा सुप्रिमंत्री अखिलेश यादव से तो वह हाल ही देश की तलेही पार्टी का चेहरा बनने में बाजी मार लिए हो लेकिन राष्ट्रीय परिदृश्य की राजनीति से अभी बहुत दूर है , क्योंकि रघुवर्म सिंह यादव राजनीति के प्यादों को अपनी जेब में रखकर घूमते थे जबकि अखिलेश यादव स्वयं राजनीति के प्यादों की जेब में बैठकर राजनीति करने में मशगुल है । यही वजह है पिछले एक दशक से अखिलेश यूपी में कलकत्ता के अल्पसंख्यक वर्ग का कोई बड़ा चेहरा नहीं खड़ा कर पाए जबकि कांग्रेस ने इमरान प्रतापगढ़ी और इमरान मसूद को खड़ा करने में बाजी मार ली।

पुनर्जागरण की धरती

डॉ. गरिमा संजय दुबे

लेखक साहित्यकार हैं।



वंगाल, अविभाजित बंगाल, एक ऐसा प्रतिनिधि, प्रगतिशील रचनात्मक प्रदेश जिसके योगदान की सूची बनाने चले तो एक पूरी पुस्तक भर जाएगी, एक ही प्रदेश में हर क्षेत्र के बौद्धिकों का ऐसा जमघट कहीं और नहीं। बंगाल को समृद्ध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विरासत जिसने उसे भारत की शान में कसा एक बहुमूल्य हीरा बना दिया था, आजादी के बाद वह मलिन हो गया। द लैंड ऑफ़ रेनेसांस, पुनर्जागरण की भूमि जहां से समाज सुधार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय अस्मिता, युवा ओज और आध्यात्मिक शिक्षर के स्वर फूटते वह बंगाल नष्ट भ्रष्ट हुआ कुछ ऐसे कि अब देखने पर लगता है कि क्या यह वही बंगाल है जहां शरतचंद्र, राजा राम मोहन राय, बंकिम चन्द्र चटर्जी, टैगोर, अशापूर्णा देवी, विवेकानंद, सुभाष, और हमारे निमाई रामकृष्ण परमहंस, लाहड़ी महोदय, परमानंद, सत्यजीत रे और अनगिनत नाम ढूंढ लीजिए, नई पीढ़ी जो नहीं जानती वह देख ले, बहुत स्वाभाविक है चकित होना, न जाने किसकी दृष्टि लगी जो ऐसा प्रभाव हुआ कि अत्यधिक गरीबी और भ्रम का शिकार हुआ। सबसे समृद्ध व्यक्ति पर ही नजर लगती है, ऐसा ही कुछ हुआ बंगाल के साथ।

अपनी सम्पूर्ण आधुनिकता में, प्रगतिशीलता में भी बंगाल ने अपनी सांस्कृतिक विरासत का दामन नहीं छोड़ा था, छोड़ना भी नहीं चाहिए, किंतु जब कोई अपनी जड़ें छोड़ने लगता है, किसी विमर्श, किसी विचार के प्रभाव में तो वह त्रिशंकु की भांति हो जाता है। यह नियति केवल बंगाल की नहीं आधुनिक भारत में हर कहीं व्याप्त रही। आधुनिकता के साथ अपनी संस्कृति को बचाए रखने के लिए भारत को जितना संघर्ष करना पड़ा है वह ज्ञात इतिहास है। संस्कृति रक्षण के प्रश्न भारत के साथ सदा रहे, वह लड़ता ही रहा अपने अस्तित्व के लिए, अपनी संस्कृति के लिए।



सोहागपुर में बरसात, तेज हवा के कारण गिरे झाड़ू

सोहागपुर। शाम को तेज आंधी के बरसात से क्षेत्र में कई स्थानों पर राज्य मार्ग 22 पिपरिया नर्मदापुरम पर झाड़ों के गिरने से रास्ते बंद हैं। पुलिस रास्तों सुलभ बनाने की कोशिश कर रही है।

स्व. खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्रॉफी मैच में 72 फाइटर्स क्लब जीता

सोहागपुर। रेल्वे ग्राउंड में शुक्रवार की रात स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्रॉफी 3 प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता में तीन मैचों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि, भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। वहीं स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने सभी अर्गुमेंटों का पुष्पहारों से स्वागत किया।

जिसमें पहला 72 फाइटर्स 1ह्व जीपीएस के मध्य हुआ - जिसमें में 72 फाइटर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 84 रन बनाए। इसके जवाब में जीपीएस 67 रन ही बना पाई। मेन ऑफ द मैच सच्चिदर शाह को पुरस्कार प्रदान किया गया। दूसरा मैच जीपीएस एवं चंद्रा इंटरप्राइजेज के मध्य खेला गया। जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए जीपीएस ने 66 रन बनाए। इसके जवाब में चंद्रा इंटरप्राइजेज ने 8 ओवर में लक्ष्य प्राप्त कर लिया। मेन ऑफ द मैच अंकित ठाकुर को पुरस्कार प्रदान किया गया। तीसरे मैच में 72 फाइटर्स क्लब एवं चंद्रा इंटरप्राइजेज की बीच खेला गया। जिसमें पहले बल्लेबाजी करते

हुए 72 फाइटर्स ने 98 रन बनाए। इसके विरुद्ध बल्लेबाजी करते हुए चंद्रा इंटरप्राइजेज ने अंतिम ओवर में मैच जीत लिया। मेन ऑफ द मैच मोहसिन खान को अतिथियों ने पुरुस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगिता की अंभारिंग परिणय मालवीय, शिवम दुबे, शेख हैदर, राहुल, अभिषेक ने की। स्कोरिंग गोल्डी, आरुष पटेल, उत्सव जायसवाल ने की। खेल का आंखों देखा हाल तहसील पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान, अंकित श्रौती, दीपक मंडल ने की। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि आज प्रतियोगिता के मुकाबले भारी बरसात के कारण स्थगित किए गए हैं।

भारी बरसात से विद्युत व्यवस्था ठप्प - आज शाम करीबन चार बजे तक तेज आंधी एवं बादलों की गड़गड़ाहट से भारी बरसात होने से बिजली व्यवस्था ठप्प हो गई है। विद्युत विभाग के कर्मचारी विद्युत व्यवस्था सुचारु करने में लगे हुए हैं। इस बरसात से क्षेत्र के किसानों में चिंता की लकीरें खींच रही है। जिनकी उपज मंडी एवं खिलहानों में पड़ी हुई है। वहीं सोहागपुर एवं आस-पास के पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग 22 पर कई झाड़ू गिरने के समाचार हैं।

नीमच में बेकाबू होकर पलटी तूफान गाड़ी, 2 की मौत

नीमच (नप्र)। नीमच-झालावाड़ मार्ग पर शनिवार दोपहर को एक तेज रफ्तार तूफान वाहन बेकाबू होकर पलट गया। इस दुर्घटना में वाहन चालक और एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक गंभीर घायल को नीमच रेफर किया गया है। हादसे में 7 लोग घायल हो गए। वाहन में करीब 10 लोग सवार थे।

मन्नत पूरी कर लौट रहे थे श्रद्धालु- शनिवार दोपहर को मनासा के सावन कुंड गांव में आयोजित मन्नत कार्यक्रम में शामिल होकर गाथरी गुजर समाज के लोग भानपुरा के ग्राम अंतरालिया लौट रहे थे। इस दौरान पटेल श्री होटल के पास दोपहर करीब 2 बजे बैसला घाट के पास वाहन अचानक बेकाबू होकर पलट गया।

दो की मौत, घायलों में दो मामू- हादसे में 55 वर्षीय सोहन बाई और 40 वर्षीय चालक भारत चौहान की मौके पर ही जान चली गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई।

जनपद

छीनी नहीं जा सकती है बंगाल से उसकी पहचान

जब समझा तब तक विनाश हो चुका था।

प्रश्न यह है कि क्या शोषण को इस तरह समाप्त किया जा सकता है? या संवाद से समाप्त किया जा सकता है, मजदूर हारे, मरे, न काम था, न क्रांति उनका शोषण समाप्त कर पाई, यही बात ठीक यही प्रक्रिया नक्सलवादी मूवमेंट का आधार बनती है।

हालत यह है कि बहुत पहले किसी अंग्रेजी पत्रिका में लेख पढ़ा था कि बंगाल केवल बुजुर्गों का स्टेट है वह युवा नहीं है, सब बाहर गए क्योंकि कोई इंस्ट्रुटी लगने नहीं दी गई, कोई विकास होने नहीं दिया गया और हड़ताल, हड़ताल हड़ताल से कोई वहां जाना नहीं चाहता।

कुछ उम्मीद के साथ ममता सरकार आई, कम्युनिस्ट पार्टी को पछड़ कर, लेकिन थोड़े बहुत सुधार के अलावा वही स्थिति और तुष्टिकरण ने इसमें आग में घी का काम किया। सीमावर्ती राज्य होने से बंगाल की जटिलताएं और भी बढ़ जाती हैं, तब केवल वह बंगाल का विषय न होकर राष्ट्रीय सुरक्षा और सांस्कृतिक अस्तित्व का प्रश्न बन जाता है।

यह वह पक्ष है जिसका कोई विपक्ष नहीं हो सकता, बंगाल से संवेदना रखने वाले वाले इस तथ्य को कैसे नकारेंगे, ममता जीवत वाली महिला है, बदल सकती थीं बंगाल का भाग्य, अब भी बदल सकती हैं किंतु...

संसाधन सबसे बराबर बंटें यह बहुत आदर्श सिद्धांत है किंतु संसाधनों को बांटने के पहले संसाधनों का सृजन तो करना होगा न, पूंजी सबसे बराबर बंटें किंतु बिना पूंजी के सृजन के क्या पूंजी का वितरण संभव है?

पूजी के, संसाधन के सृजन के सभी रास्ते बंद कर हम गरीबी, बेरोजगारी हटाना चाहते हैं, क्या यह संभव है?

एक विचार सरणी कहती है हमें अंधेरों की ओर देखना होगा, बिल्कुल ठीक है, केवल उजाले की तरफ देखना तो आधी अंधूरी दृष्टि होगी, किंतु क्या उजालों से मुंह मोड़कर अंधेरा मिटाया जा सकेगा?

क्या सुख से मुंह मोड़कर दुःख दूर किया जा सकता है?

क्या समृद्धि से मुंह मोड़कर विपन्नता को हारा जा सकता है?

क्या भरे पेट से मुंह मोड़कर भूख को पराजित किया जा सकता है, क्या स्वयं भूख रहकर किसी की भूख मिटाई जा सकती, नहीं खुद भी भोजन के जतन करने होंगे और उन उजालों को, उस सुख को, उस समृद्धि को, उस भोजन की थाली को

उन जगहों पर बांटना होगा जहां अंधेरा है, विपन्नता है, दुःख है, भूख है।

यही कल्याणकारी राज्य की अवधारणा है न, यही समाजवाद का मानवतावादी सिद्धांत।

कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में क्या पूंजी के सृजन का विरोध है कहीं?

समाजवादी विचार में संसाधनों के सृजन की, विकास के अवसरों के विरोध की धारणा है कहीं?

नहीं वहां विरोध है भेद का, शोषण का, किंतु किसी व्यक्ति को कोई बीमारी हो जाए तो कुशल चिकित्सक उस व्यक्ति को जरूर देकर मार नहीं देता, उसके रोग का इलाज करता है। वैसे ही संसार की हर व्यवस्था में कुछ विसंगतियां होती हैं, रोग होते हैं, उसका इलाज होना चाहिए न कि वह व्यवस्था ही समाप्त कर दी जाए।

जहां शोषण है, अन्याय है वहां से उनके खासों को बात हो न कि उन सभी व्यापार, कारखानों, संस्थाओं के विनाश की। विकास की अवधारणा में आ रहे लालच, शोषण, पर्यावरण के खतरों को कम करके विकास को मानव उन्मुखी होने के साथ साथ पर्यावरण हितैषी होने पर बात हो न कि विकास की अवधारणा को ही समाप्त कर दिया जाए।

उसी विकास से बने आधुनिक संसाधनों का हम उपयोग करते हैं, सुविधाजनक जीवन के लिए उन्हें उपयोग करते हैं, निजीकरण पूंजीवाद का विरोध करने वाले परिवारों के बच्चे उन्हें पूंजीवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में बड़े पदों पर हैं, किंतु हम गरीब मजदूरों के लिए उसी पूंजी, विकास की उस

अवधारणा का विरोध करते हैं। बात केवल बंगाल की नहीं यह सिद्धांत पूरे राष्ट्र पर लागू होता है, किंतु बंगाल ने इसकी बड़े लंबे समय तक कीमत चुकाई है। पुनर्जागरण की धरती पीड़ित रही अनेक कारणों से, सत्ता किसी की भी रही हो बंगाल के भद्रलोक का मन कोई न जान सका, अपने संकोच में, भद्र आवरण में वहां का लोकमानस भी मुखर नहीं हुआ, सत्ता किसी की भी हो, ममता बैनर्जी हो या बी जे पी की, बंगाल को एक और पुनर्जागरण की आवश्यकता है, अपने भौतिक विकास के लिए भी और अपने सांस्कृतिक ढांचे को बचाने के लिए भी, दक्षिणेश्वर काली के तेज को अनुभव करने के लिए, अपने बाउल के बैरंगी स्वर को प्रखर करने की, दुर्गा पूजा के उस चैतन्य उत्सव की ऊर्जा को जागृत करने की, अपनी महान सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक, रचनात्मक, आध्यात्मिक पहचान और

बौद्धिकों को जीवत रखने के लिए। यह पुनर्जागरण कोई राजनीतिक दल लेकर नहीं आएगा, यह वहां का जनमानस लाएगा, सत्ता किसी की हो, ममता आए या कोई और बंगाल बचा रहना चाहिए, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के साथ, भारत के एक अभिन्न अंग के रूप में, अपनी विचारधारा शुद्ध भारतीय पहचान के साथ।

चुनाव है हर जीत का गणित हमें नहीं पता, पक्ष विपक्ष हम नहीं जानते, हम भारत पंथी हैं, उस महान सभ्यता संस्कृति के विनाश को देखने को अभिशात रहें हैं, जो चाहते हैं कि विश्व की सबसे उदार संस्कृति अपने अस्तित्व को बचा सके, उसकी विकृतियों को समाप्त कर सके, हम इतना जानते हैं कि बंगाल उस संस्कृति का एक बहुत सशक्त स्तंभ है।

हम इतना जानते हैं कि बंगाल का जादू अदृश्य है, उसका आकर्षण अतुलनीय है, उसका मोह अनिवर्चनीय है, उसे बचे रहना होगा ताकि साहित्य, कला, संस्कृति के वह स्तंभ भी बचे रहें जिन पर बंगाल की अस्मिता टिकी हुई है, प्रकारंतर से जिस पर भारतीय अस्मिता टिकी हुई है, कोई राजनीतिक दल उससे उसकी यह पहचान नहीं छीन सकता।

प्रशिक्षण केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि यह कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व क्षमता को निखारने का सशक्त मंच है-संभागा प्रभारी रावत

भाजपा का दो दिवसीय जिला प्रशिक्षण वर्ग 22 व 23 मई को होगा आयोजित

धर। पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान के तहत जिला प्रशिक्षण वर्ग कार्य योजना बैठक का आयोजन भाजपा के जिला कार्यालय पर शनिवार को संपन्न हुई। बैठक का शुभारंभ भारत माता व पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों समक्ष दीप प्रज्वलित कर और वंदे मातरम के साथ किया गया।

भाजपा के संभागा प्रभारी व प्रदेश उपाध्यक्ष रणवीरसिंह रावत, भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती, भाजपा जिला संगठन प्रभारी सुभाष कोठारी, जिला प्रशिक्षण वर्ग प्रभारी नानूराम कुमावत, धार विधायक नीना वर्मा, पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया, प्रशिक्षण अभियान के संभागा टोली प्रभारी दिलीप पटौदिया, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष प्रभु राठौड़ व मनोज सोमानी, पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश महामंत्री नरेद्र राठौड़ अतिथि रूप में मंचासीन थे।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि इसके पहले चरण में मंडलों को प्रशिक्षित किया गया है। अब इसी महिने जिला स्तर का प्रशिक्षण होना है। भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक शक्ति को और अधिक सुदृढ़ बनाने का एक महत्वपूर्ण अभियान है। प्रशिक्षण ही वह धुरी है, जो कार्यकर्ता को राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करती है। एक सशक्त, जागरूक और वैचारिक रूप से समृद्ध कार्यकर्ता ही संगठन को ऊंचाइयों तक ले जाता है।

जिला प्रशिक्षण को लेकर भाजपा जिला कार्यालय पर हुई बैठक

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि जिला बैठक में भाजपा जिला पदाधिकारी जिले के सभी मंडल अध्यक्ष मंडल महामंत्री मोर्चा जिला अध्यक्ष महामंत्री, प्रकोष्ठ जिला संयोजक, प्रशिक्षण वर्ग जिला टोली समेत अपेक्षित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहें। राष्ट्र गीत अल्पना जोशी व संगठन गीत को अक्षय शर्मा ने लिया। बैठक का संचालन भाजपा जिला महामंत्री राकेश पटेल ने किया आभार भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रेमचंद परमार ने माना।



प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष व संभागा प्रभारी रणवीर सिंह रावत ने कहा कि प्रशिक्षण महाअभियान से प्रत्येक कार्यकर्ता को जोड़ने का प्रयास करें, जिससे संगठन की जड़ों को और अधिक मजबूती मिले। प्रशिक्षण केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि यह कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व क्षमता को निखारने का सशक्त मंच है। अब आगामी जिला प्रशिक्षण वर्गों को भी उसी ऊर्जा और गुणवत्ता के साथ सम्पन्न करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि राष्ट्रहित, सेवा, सुशासन और अत्योदय को धारण करती है। एक सशक्त, जागरूक और वैचारिक रूप से समृद्ध कार्यकर्ता ही संगठन को ऊंचाइयों तक ले जाता है।

आमजन तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया।

जिला संगठन प्रभारी सुभाषचंद्र कोठारी ने कहा कि प्रशिक्षण वर्ग में सभी अपेक्षित पदाधिकारी समेत कार्यकर्ताओं का उपस्थित रहना अनिवार्य है। प्रशिक्षण वर्ग नए कार्यकर्ताओं को गढ़ने का सशक्त माध्यम है। 23 व 24 मई को मंडल में यह प्रशिक्षण वर्ग संपन्न होगा। जिला पदाधिकारी, जिला मोर्चा अध्यक्ष व महामंत्री, मंडल अध्यक्ष, मण्डल प्रभारी, प्रकोष्ठ जिला संयोजक, सांसद विधायक, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिका अध्यक्ष, प्रकोष्ठ व मोर्चे प्रदेश पदाधिकारी, स्थानीय स्तर पर जिले की टोली व अन्य कुछ नाम भी शामिल हो सकते। 150 से 200 लोग प्रशिक्षण लेंगे।

गैस बुकिंग के नाम पर आनलाइन धोखाधड़ी से बचें

सोहागपुर। अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावती ने सोहागपुर ब्लाक के नागरिकों को सचेत किया है कि वर्तमान समय में गैस सिलेंडर बुकिंग के नाम पर साइबर ठगी, फर्जी कॉल एवं ऑनलाइन धोखाधड़ी की घटनाएं सामने आ रही हैं। अतः सभी उपभोक्ताओं से अपील है कि गैस बुकिंग एवं शिकायत हेतु केवल अधिकृत नंबरों का ही उपयोग करें। किसी अनजान कॉल, लिंक अथवा संदेश पर विश्वास न करें तथा ओटीपी, बैंक विवरण की जानकारी साझा न करें। सोहागपुर अनुविभाग क्षेत्र के समस्त प्लंपीजी गैस उपभोक्ताओं अधिकृत गैस एजेंसियों के गैस सिलेंडर बुकिंग एवं शिकायत के लिए आधिकारिक नंबर खनुजा एचपी गैस एजेंसी बुकिंग नंबर : 8888823456

टोल फ्री नंबर : 1800-2333-555 एवं राधिका भारत गैस एजेंसी, सेमरीहरचंद बुकिंग नंबर : 7715012345 एवं आदर्श भारत गैस एजेंसी, शोभापुर बुकिंग नंबर : 7718012345 सेमरी हरचंद एवं शोभापुर के लिए

टोल फ्री नंबर : 1800-22-4344 निर्धारित किया गया है।

सोहागपुर विधानसभा में कांग्रेस प्रदेश सह प्रभारी का आगमन आज

सोहागपुर जिस प्रकार भाजपा नेता प्रदेश की करीबन 70 ऐसी विधानसभा क्षेत्रों का चयन किया है। जिसमें उसके प्रत्याशी कम मतों से विजयी हुए हैं। या पराजित हो चुके हैं। उन विधानसभा क्षेत्रों में की पिछले दिनों से दिल्ली एवं प्रदेश में भाजपा को सशक्त बनाने के लिए मंथन चल रहा है। तथा आगामी रणनीति को बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे में सोहागपुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में कांग्रेस प्रदेश सह प्रभारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सचिव श्रीमती उषा नायडू का आगमन सोहागपुर की वाटिका ग्राउंड 3 मई को 11 बजे हो रहा है। इस बैठक में सोहागपुर विधानसभा के माखननगर ब्लाक एवं सोहागपुर ब्लाक के कांग्रेस पदाधिकारियों जिसमें नवनियुक्त मंगलम पदाधिकारी, निर्वाचित जनप्रतिनिधि, प्रत्याशी गण, वरिष्ठ कांग्रेस नेता, सेवादल, एनएसयूआई एवं कांग्रेस के समस्त विंगों के पदाधिकारियों को उपस्थित रहने की अपील ब्लाक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सुधीर ठाकुर एवं नगर कांग्रेस अध्यक्ष प्रशांत जायसवाल ने की है। इस बैठक में पूर्व विधायक जिला संगठन प्रभारी संजय शर्मा, विधानसभा प्रभारी कवींद्र रघुवंशी, जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष शिवाकांत गुड्डन पांडेय भी उपस्थित रहेंगे।

सोहागपुर विधानसभा में प्रदेश स्तरीय नेता - सोहागपुर विधानसभा के बीते चुनाव में भाजपा के अजेय रहे विधायक विजयपालसिंह ने कांग्रेस के पुष्पराजसिंह पटेल को

करीबन 1762 मतों से हराया था। इस चुनाव में इससे ज्यादा मत नोटों में जन-मानस ने दिए थे। सोहागपुर विधानसभा के बीते चुनाव में भाजपा को माखन नगर ब्लाक ने हारने से बचाया था। संभव तथ्य इसी कारण मुख्यमंत्री मोहन यादव को दादा माखनलाल चतुर्वेदी की नगरी में बुलाकर लाड़ली बहना की राशि आवंटित की थी। वहीं अनेकों योजनाओं की घोषणाएं की गई थी। इधर कांग्रेस को सोहागपुर विधानसभा चुनाव में आदिवासी क्षेत्रों में काफी बढ़त दिलाई थी। इसी कारण नवनियुक्त ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर ने सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय के समीपवर्ती आदिवासी ग्राम कामती रंगपुर में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजयसिंह को बुलाकर सम्मेलन आयोजित किया था।

वहीं कांग्रेस ने अपने कमजोर माखन नगर की नब्ब पकड़कर बाग्रातवा रेलवे स्टेशन पर रेलवे सुविधाओं को लेकर बड़ा आयोजन करके माखन नगर से लेकर बाग्रातवा रेलवे स्टेशन तक पैदल यात्रा निकाली गई थी। जिसमें जिले भर के कांग्रेसी नेता एवं कार्यकर्ताओं के अलावा प्रदेश सह प्रभारी श्रीमती उषा नायडू भी शामिल हुए थीं। यहां आयोजित आमसभा में कांग्रेस ने एक तीर से दो निशाने साधे थे। जिसमें उन्हीं दिनों बोहानी रेलवे स्टेशन पर क्षेत्रीय सांसद चौधरी दर्शनसिंह के इंटरसिटी एक्सप्रेस के ठहराव को लेकर मंचासीन नेता नेता उनको आडो हाथों लेते वय्यात्मक लहजे में टिप्पणियां करके कहा कि कहा सोहागपुर की जनता-जनार्दन सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय पर सालों से रेल स्टपेज को मांग

करती आ रही थी। लेकिन क्या सोहागपुर से बोहनी बड़ा है यह सवाल जनता से पूछकर कई उल्लेखनीय टिप्पणियां करते कहा था कि सोहागपुर रेलवे स्टेशन बुनियादी सुविधाएं से अछूता है। कांग्रेस ने माखननगर की दुखती रंग पर हाथ रख कर माखननगर एवं सोहागपुर के कांग्रेस जनों के एक प्रतिनिधिमंडल ने जबलपुर जाकर माखन नगर की रेल सुविधाओं को लेकर एक ज्ञापन सौंपा कर रेलवे सुविधाओं की दरकार की थी। हालांकि अभी आगामी विधानसभा चुनाव में समय है। भाजपा एवं कांग्रेस दोनों चाहेंगे कि सोहागपुर विधानसभा को फतह किया जा सके। हालांकि पिछले दिनों सोहागपुर विधानसभा के ग्राम ठीकरी में भाजपा एवं कांग्रेस सहित कई गणमान्य नागरिकों के बीच पूर्व विधानसभा अध्यक्ष सीताशरण शर्मा की उपस्थिति हुई थी। जिसमें ऐक्टिव भारत मंच को प्रभावशाली बनाने का मंथन किया गया था। जिसमें विशेष कार्य करने वालों को सम्मानित करने की योजना बनाई गई थी। लेकिन इस बैठक के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं।

नागरिकों की दुखती रंग - भाजपा एवं कांग्रेस दोनों के लिए आगामी विधानसभा चुनाव में मत पलटाने के लिए करने होंगे धरातल पर कार्य। जिसमें सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय पर प्रतिदिन बिजली की समस्या, रेलवे स्टेशन पर सुविधाओं का अभाव, प्लेटफार्म नंबर दो अंग्रेजी के जमाने से नीचा है। यात्रियों को होती है परेशानी, दो वार्डों इंदिरा वार्ड एवं तिलक वार्ड सहित करीबन 30, आदिवासी ग्रामीणों के

आवागमन के रास्ते में ओवर ब्रिज की आवश्यकता। इसके अभाव में नागरिक एवं छात्र छात्रों सम्पार गेट खुलने के इन्तजार में खड़े रहते हैं। भाजपा की नगर पंचायत परिषद निर्वाचित होने के उपरांत से ही सफाई व्यवस्था का अभाव प्रतिदिन सोशल मीडिया पर कटाक्ष अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि गड्डों को दुरुस्त करने की तरफ सदासीनता। पलकमती नदी प्रदुषित हो गई है। जिसमें नगर के करीबन दस से अधिक गंदे नालों के पानी ने नदी को हरी घास का नाला बना दिया है।

नया को कोई योजना नहीं। अव्यवस्थित सब्जी मंडी। दो पहिया वाहनों के कोई नहीं है स्थान। पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग 22 फोर लाइन की महती आवश्यकता। आए दिन दुर्घटनाओं में इजाफा। पलकमती पुल पर नित्य प्रति जाम, ग्राम शोभापुर के राज्य मार्ग से भटपौर रास्ते पर लगभग रोज मार्ग अवरूद्ध होना सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय के समीप ब्लैक स्पाट लगा बम्हारी यहां है 90 कोणीय रास्ता आए दिन दुर्घटनाएं एक बस दुर्घटना में करीबन 18 यात्रियों की मौत के बाद जनप्रतिनिधियों की घोषणा लेकिन धरातल पर कुछ नहीं करनपुर, रानी पिपरिया मोड़ दुर्घटना के स्थल। वहीं सोहागपुर में उद्योगों की महती आवश्यकता। ताकि युवकों को रोजगार मिला सके। वर्तमान में किसानों की उपज शासकीय खरीदी। चिकित्सालय में संसाधनों की कमी अधिकांश मरीज जिला मुख्यालय भेजे जाते हैं। यही है सोहागपुर विधानसभा का मुख्यालय।



**इन्वेस्ट
मध्यप्रदेश**

— अनेत संभावनाएं —

MPIDC

MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT
CORPORATION LTD.



**प्रदेश की प्रगति का
स्वर्णिम पथ**



उज्जैन-इंदौर मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र की महत्वपूर्ण परियोजना

**इंदौर-पीथमपुर
इकोनॉमिक कॉरिडोर
(प्रथम चरण)**

भूमिपूजन

मुख्यमंत्री

डॉ. मोहन यादव
द्वारा

3 मई, 2026 | ग्राम नैनोद, इंदौर

लंबाई
20 कि.मी.

क्षेत्रफल
1300 हेक्टेयर

लागत
₹2360 करोड़

कनेक्टिविटी
NH-47 | NH-52

किसानों को उनकी भूमि का 60% विकसित भू-खण्ड लौटाने का ऐतिहासिक निर्णय

परियोजना के लाभ

- ▶ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निवेश आकर्षण
- ▶ पश्चिमी इंदौर के विकास को नई गति
- ▶ भारी यातायात के दबाव से राहत
- ▶ 300+300 मीटर बफर ज़ोन
- ▶ लॉजिस्टिक्स एवं मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी
- ▶ रोज़गार के नये अवसरों का सृजन
- ▶ सिंहस्थ 2028 के लिए महत्वपूर्ण ट्रैफिक मार्ग

विकास सेक्टर

- ▶ IT / FinTech सिटी
- ▶ अप्रदूषणकारी उद्योग
- ▶ वाणिज्यिक क्षेत्र
- ▶ आवासीय क्षेत्र
- ▶ लॉजिस्टिक्स हब
- ▶ नागरिक उपयोग
- ▶ हरित बफर ज़ोन